अजय धारा

अंक-43, दिसम्बर 2024

राजभाषा विभाग

चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना

चित्तरंजन

राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 21 जून 2024 को अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिए ''ई-ऑफिस में हिंदी में काम कैसे करे'' विषय पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में श्री श्याम बाबू शर्मा व्याख्यान देते हुए।

राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 16 जुलाई 2024 को आयोजित किये गए ''क्षेत्रीय हिंदी वाक् प्रतियोगिता'' का एक दृश्य।

दिनांक 18 जुलाई 2024 को आयोजित क्षेत्रीय नाट्य प्रतियोगिता- 2024 के अवसर पर प्रस्तुत किए गए नाटक ''सन्त्रास'' के मंचन का एक दृश्य।

राजभाषा पखवाड़ा-2024 के अवसर पर दिनांक 5 सितम्बर 2024 को आयोजित ''हिंदी टंकण प्रतियोगिता'' का एक दृश्य।

अजय धारा

अंक-43, दिसम्बर 2024

संरक्षक

विजय कुमार

महाप्रबंधक

प्रधान संपादक

हामिद अख्तर

मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं
प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर

संपादक

डॉ० मधुसूदन दत्त

राजभाषा अधिकारी

सह-संपादक

धनंजय कुमार शुक्ला

कनिष्ठ अनुवादक

सहयोग

मधु शर्मा, वरिष्ठ अनुवादक
दुर्गेश नंदिनी, वरिष्ठ अनुवादक
हरपाल सिंह, वरिष्ठ अनुवादक

पत्रिका में प्रकाशित लेखों/रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं और संपादक मंडल इसके लिए जिम्मेदार नहीं है।

पत्र व्यवहार का पताः

संपादक
अजय धारा
राजभाषा विभाग
महाप्रबंधक कार्यालय, चिरेका, चित्तरंजन
ई-मेल-clwrajbhasha@gmail.com
: निःशुल्क वितरण के लिए :

इस अंक में

क्रम सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1	शांति और खुशी	हामिद अख्तर	05
2	उसूल	अरविन्द्र कुमार मेश्राम	07
3	पगडंडिया	अरविन्द्र कुमार मेश्राम	12
4	कार्य की गुणवत्ता वृद्धि....	शंकर शर्मा	13
5	ये समय न लौट के आएगा	हरिओम चौहान	16
6	महापर्व : कुंभ	डॉ. मधुसूदन दत्त	17
7	मानव सेवा को समर्पित....	महिला कल्याण संगठन	19
8	मोबाइल- एक आवश्यक....	हरपाल सिंह	21
9	फोटोग्राफीः यादों की तस्वीर	श्रेया घोष हाजरा	24
10	अभी बाकी है	भगवान दास	24
11	नागरिक सुरक्षा	शरत चन्द्र महतो	25
12	भारतीय रेलः एक.....	संजीव कुमार सिंह	28
13	डिजिटल अरेस्ट	राजेश कुमार	30
14	नानी की जिद	राम नरेश रजक	32
15	विज्ञान और दर्शन	रोहन कुमार सिंह	34
16	बस रेल सफर....	कल्याण मुखर्जी	37
17	राष्ट्रीयता	देवेन्द्र शर्मा	38
18	नारी व्यथा	देवेन्द्र कुमार	39
19	मनोदशा	वसंत कुमार टुडू	40
20	मोबाइल फोटोग्राफी	पुल्ला महेश	41
21	रावण	रमाकान्त मंडल	42
22	अपने पराए	सुनयना बोस	43
23	भीगी सांझ	राजेश राज	44

चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना
चित्तरंजन

संदेश

आप सभी पाठकों और साहित्य प्रेमियों को चिरेका के राजभाषा विभाग की गृह पत्रिका **अजय धारा** के 43वें अंक के प्रकाशन पर मैं हार्दिक बधाई देता हूँ। इस पत्रिका ने हमारी समृद्ध साहित्यिक और सांस्कृतिक धरोहर को संजोने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है साथ ही हमारी विविधता और सामंजस्य को प्रदर्शित किया है।

हिंदी भाषा एकजुटता और संप्रेषण का सशक्त माध्यम है। हिंदी का साहित्य समृद्ध भी है और विविध भी। यह कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक और निबंध के रूप में विकसित हुआ है। हिंदी भाषा केवल संवाद का साधन नहीं है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक गरिमा एवं पहचान का प्रतीक है। यह न केवल भारत के विभिन्न हिस्सों के लोगों को आपस में जोड़ने का काम करती है, बल्कि भारतीय समाज की विविधता में एकता की भावना भी उत्पन्न करती है। हिंदी साहित्य ने भारतीय ही नहीं वरन् विश्व साहित्य को भी समृद्ध किया है।

यह हमारे लिए गर्व का विषय है कि हम **अजय धारा** के इस नवीनतम अंक के माध्यम से हिंदी भाषा में अपने विचारों, अनुभवों और ज्ञान को साझा करने का एक सशक्त मंच प्रदान कर रहे हैं। यह अंक हिंदी भाषा के प्रसार और उसके महत्व को प्रकट करता है। यह हमारे कारखाने के विभिन्न पहलुओं और यहाँ कार्यरत कर्मियों की उपलब्धियों, रचनात्मकता और समर्पण को उजागर करेगा। मुझे गर्व है कि हमारे कर्मचारी न केवल तकनीकी और उत्पादकता के क्षेत्र में उत्कृष्ट हैं, बल्कि साहित्य और कला के क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे हैं।

हमारे कार्यालय में हिंदी को बढ़ावा देने से न केवल हमारे कार्य का स्तर ऊँचा होगा, बल्कि यह एक सकारात्मक वातावरण भी निर्मित करेगा। सभी कर्मचारियों को हिंदी के प्रति जागरूक करना चाहिए, ताकि वे इसे अपने दैनिक कार्यों में सहजता से अपनाएँ।

राजभाषा विभाग द्वारा की गई यह मेहनत निश्चित रूप से हमारे कार्यक्षेत्र में हिंदी के प्रति लोगों की रुचि को बढ़ाएगी और कार्यालय में हिंदी के विकास के लिए हमारे साझा प्रयासों को और मजबूत बनाएगी। आप सभी को इस सफल प्रयास के लिए हार्दिक बधाई!

(विजय कुमार)
महाप्रबंधक

चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना
चित्तरंजन

संदेश

मैं यह सूचित करते हुए अत्यंत हर्षित हूँ कि चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना के राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी पत्रिका **अजय धारा** का 43वां अंक प्रकाशित किया जा रहा है। यह उपलब्धि न केवल हमारे विभाग के लिए, बल्कि चिरेका के समस्त कर्मचारियों के लिए गर्व का विषय है। **अजय धारा** पत्रिका हमारे अधिकारियों एवं कर्मियों के हिंदी ज्ञान में वृद्धि करने के लिए एक अनमोल साधन है। यह न केवल विभिन्न विषयों पर जानकारी प्रदान करती है, बल्कि हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में अपने मन में पनपने वाले उद्गारों को रचनात्मक रूप प्रदान करने के लिए भी प्रोत्साहित करती है। हिंदी भाषा को समझने और उपयोग करने की क्षमता बढ़ाने के लिए यह पत्रिका एक प्रेरणास्रोत है।

अजय धारा के 42वें अंक में हिंदी भाषी अधिकारियों के साथ-साथ हिंदीतर भाषी अधिकारियों ने लेखन में अपनी कुशलता का बेहतरीन परिचय दिया था एवं अपने कार्यालय में भी हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए योगदान दिया, जिससे चिरेका के विभिन्न कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने में अच्छी मदद मिली है। आज मैं गर्व से कह सकता हूँ कि चिरेका में हिंदी का प्रभावी और उत्तरोत्तर विकास हो रहा है।

मैं राजभाषा विभाग के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए विशेष रूप से बधाई देता हूँ। हिंदी को बढ़ावा देना आवश्यक है, ताकि सभी कर्मचारी इसे अपनी दैनिक गतिविधियों में सहजता से शामिल कर सकें।

आशा है कि हम सभी मिलकर हिंदी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को और मजबूत करेंगे तथा हिंदी को एक प्रमुख स्थान दिलाने के लिए प्रयासरत रहेंगे।

(हामिद अखतर)
मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं
प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर

चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना
चित्तरंजन

संपादकीय

आप सभी को यह जानकारी देते हुए अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना की राजभाषा पत्रिका **अजय धारा** के 43वें अंक का प्रकाशन हो रहा है।

यह पत्रिका हमारे कारखाने के अद्वितीय इतिहास, संघर्ष और उपलब्धियों का एक जीता-जागता दस्तावेज है। हमारे सभी कर्मठ कर्मचारियों, इंजीनियरों और अधिकारियों के अटूट परिश्रम और योगदान के बिना यह संभव नहीं हो पाता। आपकी मेहनत और समर्पण ने इस पत्रिका को भारतीय रेल में ऊँचे पायदान पर पहुँचा दिया है।

हिंदी हमारी राजभाषा होने के साथ-साथ संपर्क भाषा भी है, राजभाषा के रूप में सरकारी कार्यों में इसका प्रयोग किया जाना हमारी संवैधानिक बाध्यता भी है। सरकारी कार्यालयों में हिंदी भाषा के प्रचलन और उसके विकास को प्रोत्साहित करना हमारा कर्तव्य है। हिंदी न केवल हमारे संचार का माध्यम है, बल्कि यह हमारी संस्कृति, हमारी पहचान और हमारे गौरव का प्रतीक है। राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रसार हमारे देश के एकीकरण और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सरकारी कार्यालयों में हिंदी भाषा का प्रचलन और उसका विकास हमारे देश की सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने और उसे आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मैं आशा करता हूँ कि इस अंक को पढ़ते समय विभिन्न विधाओं का आनंद प्राप्त करेंगे। हमारी इस यात्रा में निरंतर सहयोग और समर्थन के लिए हम आपके आभारी हैं।

इस पत्रिका को और अधिक रूचिकर बनाने के लिए हमें आपके सुझाव और सहयोग की अपेक्षा है।

आप सबों का नव वर्ष मंगलमय हो!

(डॉ० मधुसूदन दत्त)
राजभाषा अधिकारी

शांति और खुशी

हामिद अख्तर
मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर

हम सब खुश रहना चाहते हैं। हमारे जीवन का उद्देश्य सुखपूर्वक जीना है। हालाँकि, हममें से अधिकांश को यह एहसास नहीं है कि खुशी भौतिक विकास या भौतिक कल्याण या पद से नहीं आती है, बल्कि यह तो मन की शांति, संतुष्टि और सुकून से आती है। मन की शांति तथा सामाजिक रिश्तों में शांति सभी मनुष्यों की एकता, न्याय, क्षमा, करुणा और दया की अवधारणा से आती है।

व्यक्तियों के भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण, भिन्न-भिन्न विचार हैं और वे खुशी के लिए भिन्न- भिन्न संसाधनों का उपयोग करते हैं। खुशी की तलाश में कई व्यक्ति वातानुकूलित घरों, चार पहिया वाहनों, शॉपिंग मॉल और धन-संपत्ति जैसी विलासिता की ओर आकर्षित होते हैं। ये भौतिक संसाधन, शारीरिक व भौतिक आराम तो देते हैं परंतु वास्तविक खुशी नहीं। कुछ इसे पर्यटन जगत में, कुछ संगीत में, कुछ भोजन में और कुछ साहित्यिक सृजन और सामाजिक सेवाओं में ढूंढते हैं, लेकिन शांति उनमें से अधिकांश से दूर है।

शांति 'जीतने' में नहीं है, 'पद' पाने में सफल होने में नहीं है, धन संचय करने में नहीं है। यह आश्चर्य की बात है कि लोग इस सरल और नग्न सत्य के प्रति कैसे अंधे हैं। तथाकथित 'सफल' और उच्च पद पर आसीन लोग, वास्तव में अधिक बेचैन होते हैं, कई बार जितना वे शांत दिखाई पड़ते हैं उससे कहीं अधिक दुख महसूस करते हैं और दुखी होते हैं।

हमें क्षणिक खुशी व स्थायी खुशी के बीच अंतर करना चाहिए। अत्यधिक स्वादिष्ट भोजन खाने से क्षणिक खुशी तो मिलती है, लेकिन इसके दीर्घकालिक दुष्प्रभाव हो सकते हैं। अल्पकालिक संतुष्टि खुशी नहीं है। आधुनिक संस्कृति में खुशी के अस्थायी रूपों का जश्न मनाया जाता है। वास्तविक खुशी ईश्वर की आज्ञा मानने और पापों से दूर रहने में है।

लोगों को गहन चिंतन की प्रवृत्ति विकसित करनी चाहिए, जिससे वे शीघ्र ही बुद्धिमान बन जाएंगे। वे जल्दी ही यह समझ जाएंगे कि न्याय की भावना विकसित करने, सह- मानवीय सहायता करने से ही शांतिपूर्ण रास्ते निकलेंगे, न कि बनावटी और विरोधाभासी रवैये से। बुद्धिमान व्यक्ति जानते हैं कि शांति कहीं और ही है। जीवन भर संघर्ष करने के बाद, कुछ लोग यह समझकर बुद्धिमान हो जाते हैं कि खुशी मूल्य-आधारित जीवन जीने से आती है, जैसे कि मानवीय बनना, करुणा विकसित करना, दूसरों की मदद करना और न्याय करना।

इस प्रकार, वास्तविक खुशी भौतिक संपदा या बाहरी वातावरण में नहीं बल्कि ईश्वर और उसकी रचनाओं के साथ रिश्ते में और रचनाकारों की इच्छाओं का पालन करने में है। यह मन से आती है।

संक्षेप में और विशिष्ट रूप से कहें तो नीचे कुछ

सुझाव दिए गए हैं जो निश्चित रूप से खुशी लाएंगे और जीवन को उद्देश्यपूर्ण और सहजता से जीने में मदद करेंगे।

1. **कृतज्ञता प्रकट करना-** आपको जो भी प्राप्त है, उसके लिए आभार व्यक्त करें और अपने परिप्रेक्ष्य में बदलाव देखें।

2. **तुलना न करना -** अपने से अधिक भाग्यशाली व्यक्तियों से अपनी तुलना न करें, अगर आप तुलना करना ही चाहते हैं, तो कम भाग्यशाली लोगों से करें।

3. **अपने गुणों, कृतज्ञता, दयालुता-** की तुलना उन लोगों से करें, जिनमें ये अनमोल मूल्य अधिक हैं।

4. **अपने जीवन के उद्देश्य खोजें,** लक्ष्य निर्धारित करें और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए प्रेरित महसूस करें।

5. **उन लोगों को माफ करने का प्रयास करें** जिन्होंने आपको परेशान किया है या आपके साथ अन्याय किया है। यह मुश्किल है लेकिन अगर आप इसका अभ्यास करेंगे तो आपको आंतरिक शक्ति मिलेगी।

6. **दूसरे लोगों, रिश्तेदारों, पड़ोसियों, निराश्रितों,** अनाथों और समाज की बड़े पैमाने पर मदद करें और बदले में कुछ पाने की उम्मीद न करें।

7. **हृदय को घृणा, क्रोध, ईर्ष्या, अहंकार, पक्षपात** आदि विभिन्न रोगों से बचाते हुए स्वयं को शुद्ध करें।

8. **सर्वोच्च शक्ति में विश्वास रखें और उसके आदेशों** का पालन करें तथा उसके दिव्य आदेश को स्वीकार करें।

9. **आत्म-प्रेरित बनें** और अपने जीवन की ज़िम्मेदारी स्वयं लें।

10. **सत्य को खोजने का प्रयास करें,** सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास न करें। सत्य को खोजने की प्रक्रिया ही सुख की स्थिति है।

उसूल

अरविन्द्र कुमार मेश्राम
प्रधान मुख्य सामग्री प्रबंधक

हमारे जेहन में खान चाचा की याद एक अलहदा किरदार की तरह ही महफूज है। खान चाचा का नाम अब्दुल था। कद काठी में छोटे थे, पर दिमाग से बहुत तेज़। हल्का-फुल्का बदन, लम्बी दाढ़ी, सफेद कुर्ता-पैजामा और सिर पर सफेद-काले रंग की जाली वाली गोल टोपी। वैसा ही काँधे पर सफेद-काले रंग का चेक वाला रुमाल और मुँह में पान की गिल्लौरी। जबसे हमने होश सम्भाला यही सूरत और सीरत नजर आयी थी। आते-जाते हर छोटे-बड़े बच्चे की पीठ पर धौल जमाते रहते थे। गली से गुजरते लोगों से उटपटांग बात किये बिना उन्हें चैन नहीं था। ज्यादातर लोग उनसे उलझने से बचते थे। वैसे तो बहुत जिंदादिल इंसान थे, लेकिन उसूलों के पक्के और जबान के भी। जो बात कह दी तो निभानी ही है, फिर तो चाहे जो हो।

कहते हैं कि उनकी ये आदत बचपन से थी कि बात उसूल पे आ गयी तो कुछ भी सह लेंगे, लेकिन पीछे नहीं हटेंगे। सुनते हैं कि जवानी में और ज्यादा जिद्दी थे। तब वे शरीर से गठीले और आकर्षक थे। चमकीले शर्ट-पैंट में जंचते भी खूब थे। जवानी की शुरुआत में ही उनकी शादी की बात पक्की हो गई थी। शादी जल्द होने वाली थी, लेकिन हमारी होने

वाली चाचीजान (जिनका शुभ नाम 'नफीसा बी' था) शादी से पहले पढ़ाई खत्म करना चाहती थी। वाकया बहुत छोटा है, लेकिन याद आ गया तो सुना देता हूँ। हमें हमारी मम्मी ने सुनाया था।

नफीसा बी और मेरी मम्मी उन दिनों एक ही कॉलेज में बी. एड. कर रहे थे। दोनों महिला हॉस्टल में रहती थीं और बहुत अच्छी सखियां थी। कॉलेज और हॉस्टल एक पहाड़ी कस्बे में था। हॉस्टल दो मंजिला था, जिसके चारों ओर एक बाउंड्री वॉल थी। सामने गेट पर चौकीदार रहता था। नीचे हॉस्टल वार्डन का अलग से घर था, बाउंड्री वॉल के अन्दर और गेट के करीब। बिल्डिंग के सामने कुछ पेड़ थे जिनके नीचे बेंच लगे थे। जब भी कोई मिलने आता तो पहले चौकीदार वार्डन से अनुमति ले लेता, फिर वहीं प्रांगण में ही मुलाकात होती थी। कॉलेज वहां से थोड़ी ही दूरी पर था।

कस्बे में दिन में दो-तीन बार ही बस आती थी। इसलिए ध्यान रखना पड़ता था कि वापिस जाने की बस छूट ना जाए। कस्बे में कोई धर्मशाला या होटल तो था नहीं। इसलिए जब भी कोई हॉस्टल में मिलने आता तो हर कोई इस बात का खयाल रखता कि जाने वाली आखिरी बस छूटने ना पाए।

एक बार अब्दुल चाचा उधर के पास के गाँव में किसी कार्यक्रम में गए थे। वापसी में खयाल आया कि यहाँ तक आया हूँ तो दो-चार मिनट के लिए नफीसा बी से मिलता चलूँ। सुबह-सबेरे ही पहुँच गए। लेकिन वहाँ ये देख कर हैरान हो गए कि घर के सदस्यों से इतर किसी को भी महिला हॉस्टल के प्रांगण में प्रवेश की अनुमति नहीं थी। चौकीदार के द्वारा हॉस्टल वार्डन को

इल्तिजा भिजवाई कि चूंकि शादी तय हो चुकी है इसलिए मिलने की अनुमति दी जाए, बस थोड़ी देर के लिए। महिला हॉस्टल में कायदे कुछ ज्यादा कठोर होते हैं। नए जमाने के रग-ढंग में किसी जवान लड़के पर अमूमन कोई यकीन भी नहीं करता। फिर महिलाओं के मामले में देख-सोच कर ही निर्णय लेना पड़ता है। वार्डन ने नफीसा बी को बुलाया और पूछताछ की। वहाँ आँगन में अन्य लड़कियां भी खड़ी थी। किसी लड़की से मिलने जवान लड़का आये तो, थोड़ा रोमांच सबको होता है। दबे जुबान से खिलखिलाहट भी बिखर गयी। नफीसाबी ने अब तक किसी को नहीं बताया था कि उनकी शादी तय हो चुकी है, सिवाय मेरी मम्मी के। सुबह-सबेरे इस अकस्मात स्थिति से घबरा गयीं। उनकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दें। ऐसे भला कोई महिला हॉस्टल में मिलने आता है, बिला वजह? परेशान होकर कह दिया कि नहीं मिलना चाहती। वैसे इस तरह मिलने आने की कोई वाजिब वजह भी नजर नहीं आ रही थी, नफीसा बी को। खैर वार्डन को तो अच्छा बहाना मिल गया। तुरंत चौकीदार से कहला भेजा कि अनुमति नहीं दी जा सकती।

जनाब अब्दुल, इतनी आसानी से मान जाने वालों में कहाँ थे। चौकीदार से ही जिरह करने लगे कि इतनी दूर से आये हैं तो दो मिनट के मुलाकात करने दिया जाए, विशेषकर, तब जब कि शादी तय हो चुकी है। जब चौकीदार नहीं माना तो उन्होंने खुद वार्डन से बात करने की कोशिश की। वार्डन अपने उम्र के उस पड़ाव में थी कि वे कुछ दिनों में इस सरकारी सेवा को अलविदा कहने वाली थी। एक अरसा बीत गया था, हॉस्टल को संभालते हुए। वह थक चुकी थीं, उन्होंने शादी नहीं की थी। उन्होंने पहले ऐसे कुछ वाकये देखे थे जब शोहदे किस्म के लड़के हॉस्टल की लड़कियों से मिलने आते थे और परेशानियां खड़ी करते थे। बात बनने की जगह और बिगड़ गयी जब वार्डन ने कह दिया कि हॉस्टल आशिकों के इश्क़िया शौक पूरे नहीं कर सकता। बात जो अब तक सीधी-सादी लग रही थी, पूरी तरह उलझ गयी थी। चाचा जी को ये नागवार गुजरा कि कोई उनके किरदार पर ही सवाल खड़ा करे। वे उन चंद बदनाम लोगों के साथ शुमार कर दिए जायें जो अपनी हरकतों से अपने खानदान की इज्ज़त को मिटाने पर तुले रहते हैं। उन्हें अपने इरादे में ऐसा कुछ भी गलत नहीं लग रहा था। वो अपनी होने वाली पत्नी से मिलना चाहते थे, बस कुछ चंद लम्हों के लिए। अब्दुल चाचा ने वार्डन को भी जो समझ में आया कह दिया। और ये भी कह दिया कि बात आशिक़ी की बिलकुल नहीं है पर अब वो बिना मिले नहीं जायेंगे। और मिलेंगे तभी जब हॉस्टल वार्डन अनुमति देंगी। इस बहसबाजी का एक पहलू ये भी था कि सारा हॉस्टल नज़ारा देख रहा था। नफीसा बी एकदम से बदले इस हालात को समझ ही नहीं पा रही थी और शर्मिन्दा हो रही थीं।

बरसात के दिन थे। बारिश के कारण थोड़ी ठण्ड भी थी। पहाड़ी इलाकों में वैसे भी मौसम का ज्यादा कुछ ठीक नहीं रहता। थोड़ी देर में सूरज और बादलों की लुका छिपी शुरू हो गयी और लगने लगा कि बारिश होने ही वाली है। खैर अब्दुल साहिब के पास कोई ज्यादा सामान तो था नहीं, एक छोटा-सा बैग था और एक छाता था, जिसे लेकर वो हॉस्टल के सामने के बड़े पीपल के पेड़ के नीचे बैठ गए।

कॉलेज जाने का समय हुआ तो सारी लड़कियां एक-एक करके निकलती रही। नफीसा बी भी मेरी मम्मी के साथ सर झुकाए कॉलेज की ओर चल दी। अब्दुल पेड़ के नीच बैठे थे। क्लास खत्म होते-होते बहुत देर हो सकती थी। फिर वापिस जाने वाली बसों के समय का भी ध्यान रखना था, लेकिन चाचा जी

ऐसे बैठे थे जैसे कि कोई फिक्र ही न हो। घंटा-दो-घंटा बीता तो हॉस्टल वार्डन का ध्यान उधर गया। उन्हें बहुत नागवार गुजरा कि कोई उनके मना करने के बावजूद भी रुका हुआ है। एक उम्र हो गयी थी उन्हें हॉस्टल की जिम्मेदारी सम्हालते हुए, बहुत कठोर कायदों के लिए जानी जाती थी। चौकीदार को फिर से आदेश दिया कि इस लड़के को तत्काल यहाँ से रुखसत किया जाए। चौकीदार फिर वहाँ पहुंचा। और उसने डपटते हुए कहा-

''जब कह दिया कि नहीं मिलने देंगे तो फिर यहाँ क्यों बैठे हो? हॉस्टल के सामने ऐसे नहीं बैठ सकते। इसलिए यहाँ से चले जाओ।''

''लेकिन मैं तो बाहर खुले मैदान में बैठा हूँ। ये सरकारी जमीन है, यहाँ पर कहाँ लिखा है कि बैठना मना है? मैंने कोई गुनाह नहीं किया है। आप मुझे इस जगह बैठने से नहीं रोक सकते।''

''तुम ऐसे नहीं मानने वाले। तुम जैसे लोगों को ठीक करना आता है मुझे।''

ऐसा कह कर चौकीदार, जोर जबरदस्ती से ढकेलने लगा। अब्दुल दम खम में कोई कम नहीं थे। हिलने का नाम नहीं लिया। चौकीदार की सारी जोर आजमाइश बेकार थी। अब्दुल ने उनका डंडा भी उनसे छीन लिया था और दूर फेंक दिया था। बढ़ती धक्का-मुक्की से चौकीदार को ये बात तो समझ आ गयी कि इसमें जीत संभव नहीं है। इसलिए थोड़ी देर बाद बिलबिलाते हुए वह वापस लौट गया।

वक्त का काम है आगे बढना। अब दिन के साढ़े-बारह बजने वाले थे। लेकिन बादलों ने अपना पूरा आसमान ढक लिया था। आधे घंटे बाद इधर सभी लडकियां दोपहर के भोजन के लिए हॉस्टल आयीं और उधर बारिश भी जोरों से शुरू हो गयी। ऐसी धुआंधार बारिश कि थोड़ी दूर भी कुछ नज़र न आये। पूरा मैदान जलमग्न हुआ जाता था। पर मजाल है कि अब्दुल वहाँ से टल जायें। छतरी लिए वहीं खड़े रहे पेड़ के नीचे। नफीसा बी और साथ की तमाम लड़कियों ने हॉस्टल आते समय उन्हें देख लिया था। पहले उन्हें लग रहा था कि शायद वे बारह बजे वाली बस से वापिस लौट गए होंगे, लेकिन उन्हें मौजूद देखकर सभी थोड़े अचरज में थे। उन्हें ये भी एहसास था कि सुबह से इस युवा शख्स ने कुछ भी खाया नहीं है, वो तो सवेरे आठ बजे से वहीं खड़ा है।

चौकीदार को ये देख कर बड़ा सुकून मिल रहा था कि उसकी बात नहीं मानने की सजा मिल ही गयी है। दो घंटे की मुसलाधार बारिश के बाद जब मौसम में थोड़ा सुधार आया तो हॉस्टल वार्डन किसी काम से बाहर निकलीं। दूर पेड़ के नीचे खड़े अब्दुल को देखकर नाराज हो गईं। तुरंत चौकीदार को बुलाया और उसे साथ लिए खुद पहुँच गयी पेड़ के नीचे और डांटने फटकारने लगीं। चौकीदार भी ऊँची-ऊँची आवाज में चिल्लाने लगा। लेकिन अबकी बार जनाब अब्दुल बिलकुल शांत खड़े रहे। आखिर में बस यही कह दिया कि वो तो सरकारी जमीन पर खड़े हैं और ये उनका अधिकार है। कोई उन्हें यहाँ से बेवजह हटा नहीं सकता। वार्डन का पाला कभी ऐसे जिद्दी लड़के से नहीं हुआ था, जिसपर किसी बात का असर नहीं पड़ता हो। नीचे धरती बिलकुल कीचड़-कीचड़ हो रखी थी। ज्यादा देर तक वहाँ खड़ा रहना मुनासिब नहीं था। लिहाजा वार्डन थक-हारकर वापिस लौट गयीं। लेकिन उनका इरादा बिलकुल भी नहीं बदला था। इरादा तो अब्दुल चाचा का भी नहीं बदला था। बात अब उसूल पे जो टिक गयी थी।

शाम की चाय के लिए जब लड़कियां बाहर निकली तो देखा कि अब भी उसी पेड़ के नीचे कोई मौजूद है। आगंतुकों से मिलने का समय दिन में चार बजे तक ही था, इसलिए अब कोई संभावना नहीं थी।

लेकिन ये बात अब्दुल को पता नहीं थी और अगर पता भी होती तो भी शायद उनका इरादा बदलने वाला नहीं था। लड़कियों के लिए वो अब एक हीरो, एक पक्के जुनूनी आशिक जैसे लग रहे थे। लेकिन सबसे अजीब स्थिति नफ़ीसा बी की थी। उन्हें लग रहा था कि मिलने से मना करके गलती कर दी। बात वहीं ख़त्म हो जाती। ये भी खयाल चल रहा था कि उनको तो पहले यहाँ आना ही नहीं था, और अगर वार्डन नहीं मान रहीं हैं तो वापिस चले जाना चाहिए था। वे तमाम तरह के ख्यालों में उलझी हुई थीं।

थोड़ी देर में अंधेरा होने वाला था और रात के अँधेरे में किसी का इस तरह खुले मैदान में रहना अच्छा नहीं था। मौसम के असर से शाम साढ़े पांच बजे से अँधेरा छाने लग गया। थोड़ी देर में ठंडी हवाओं के तेज होने से वातावरण और भी ठंडा हो गया। हल्की रिमझिम बरसात भी होने लगी थी।

शाम के सात बजते-बजते सभी लड़कियां शाल लिए फिर रात का खाना खाने नीचे जाने लगीं। लेकिन ये उत्सुकता बरकरार थी कि क्या अब भी कोई पेड़ के नीचे मौजूद है? पहली मंजिल के छज्जे में से खड़े होकर झाँका तो पाया कि अभी भी एक परछाई दिख रही है चाँद की रोशनी में। इस ज़माने में भला कौन इस तरह जिद करता है? क्या सारी रात वहीं पर बिताने का इरादा है? थोड़ी सहानभूति होने लगी। वैसे भी इतनी दूर हॉस्टल में मिलने बहुत कम लोग ही आते हैं। अगर शादी तय हो गयी है तो घर परिवार जैसा ही माना जा सकता है, इसलिए मिलने देना चाहिए था। लड़कियां अमूमन कोमल दिल वाली होती हैं। सबको पता था कि आख़िरी बस रात साढ़े आठ बजे गुजरती है। इस मसले का कोई हल निकलना ही चाहिए। उन्होंने चौकीदार को बुलाया और कहा कि जाकर अब्दुल को समझाये। चौकीदार ने जब साफ मना कर दिया, तो एक ही रास्ता था कि वार्डन से रिक्वेस्ट करते। लड़कियों का शोर सुनकर वार्डन खुद ही बाहर आ गयीं। शायद वो ये भी समझ गयीं कि माजरा क्या है। पहले तो नफीसा बी को खूब भला बुरा कहा। फिर उन्हें लगा कि अगर ये जिद्दी लड़का रातभर खड़ा रहा और रात में उसे कुछ हो गया तो एक मुसीबत हो जायेगी। जंगली इलाका है, कुछ भी हो सकता है। फिर सुबह से बिना खाए-पिए कड़कड़ाती ठण्ड में अगर तबियत बिगड़ गयी तो भी सारा इलजाम उन पर ही आ जाएगा। इस जगह की वो ही इंचार्ज थीं। उन्होंने सोचा कि कोई रास्ता निकाला जाए कि ये बला टले।

चौकीदार से कहा कि जाकर बुला लाओ। कुनमुनाते हुए चौकीदार उठा और दूर से ही आवाज देने लगा। लेकिन वहाँ से जब कोई जवाब नहीं मिला तो थोड़ी आशंका हुई। टार्च लेकर धीरे-धीरे आगे बढ़ाते हुए पेड़ के नीचे पहुंचा तो अब्दुल को ठण्ड में ठिठुरते हुए पाया। शायद बारिश में भीगने की वजह से ठण्ड और ज्यादा लग रही थी। अब्दुल को चौकीदार की आवाज़ सुनाई नहीं दी थी, लेकिन टार्च की रौशनी देख अब्दुल चाचा सतर्क हो गए थे। खैर जब तक वो चौकीदार के साथ वो हॉस्टल के गेट पर आते तब तक हॉस्टल की तमाम लडकिया भी गेट तक पहुंच चुकी थी। उनकी हालत देख सभी को बुरा लगा। नीचे से पैंट घुटनों तक भीगी हुई थी, पाँव कीचड़ में सने थे, भूख से चेहरा कुम्हला गया था, प्यास से होंठ सूख रहे थे और ठण्ड की वजह से पूरा शरीर सिहर रहा था। चंद लड़कियों की सिसकियाँ निकल गयी।

चौकीदार की पत्नी जो इस वाकये को सुबह से देख रही थी, तुरंत अन्दर जाकर एक गिलास गरम पानी ले आयी और बोली भैय्या पानी पी लो, फिर अपने आप ही बड़बड़ाने लगी, देखो बिचारे की क्या हालत हो गयी है, यहाँ जंगल में कुछ हो गया तो कोई बचाने

भी नहीं आएगा। पानी पीकर थोड़ा अच्छा लगा तो अब्दुल थोड़ा मुस्कुराए, फिर कहने लगे इंशा-अल्लाह बहन, बहुत बहुत शुक्रिया, मुझे कुछ नहीं हुआ है। मैं बिलकुल ठीक हूँ। लेकिन मैं कहीं जाने वाला नहीं हूँ। अब तो बिलकुल भी नहीं जब मुझे यहाँ एक बहन भी मिल गयी है। मुझे अब किस बात की चिंता।''

कभी-कभी कोई एक बात पूरे वातावरण को बदल देती हैं। माहौल सुबह से ही तनाव से भरा हुआ था। लेकिन अब्दुल चाचा की इस बात को सुनकर सब मुस्कुरा उठे। कोई कितनी आसानी से भाई-बहन का खूबसूरत रिश्ता बना लेता है। ये लड़का बद-किरदार तो बिलकुल नहीं लगता। फिर इतनी जिद क्यों? वार्डन को लगने लगा था कि उन्होंने अब्दुल को एक गैर जिम्मेदार शोहदे की तरह समझने की भूल की थी। वह बोली, ''देखो बेटे, तुम ये जिद छोड़ दो और लौट जाओ। आखिर तुम नफीसा से मिलना क्यों चाहते हो?''

''मैं तो इधर पास के गाँव आया था, नफीसा की मम्मी जान ने फरमाया था कि कभी उधर जाओ तो हाल-चाल पूछ लेना। मैं इसलिए मिलने चला आया। सोचा था कि जल्दी लौट जाऊँगा। लेकिन थोड़ी ज्यादा ही देर हो गई। अब्दुल साहिब ने हल्की मुस्कान के साथ कहा, तो सभी हंस पड़े। इतनी तकलीफ के बाद भी इस जिन्दादिली से सब प्रभावित थे। वार्डन ने नफीसा बी को आवाज देकर गेट पर बुलाया और कहा..तुम दोनों को बात करने की इजाजत है, लेकिन यहीं गेट पर और सबके सामने।''

नफीसा बी को सुकून मिला कि अब शायद इस ड्रामे को खत्म किया जा सकता है। वह लड़कियों के बीच से निकलकर सामने आ गईं और अब्दुल से बोली, ''अब बहुत ज्यादा रात हो रही है, आखरी बस चली जायेगी, अब मत रुकना।'' अब्दुल चाचा झट से बोले, ''अब तुमसे मुलाकात हो गई तो रुकने की जरूरत ही नहीं है। लेकिन हाँ मैं घर जाकर जरूर बता दूंगा कि तुमने मिलने से मना कर दिया था।'' उनकी बात सुनकर सब की हंसीं फूट पड़ी। तब तक चौकीदार की पत्नी मेस से गरम दूध का गिलास ले आयी। दूध पीते-पीते अब्दुल चाचा ने न सिर्फ वार्डन को और चौकीदार, उसके परिवार को, बल्कि वहाँ खड़ी सभी लड़कियों को 'अपनी और नफीसा बी' की शादी में आने का न्योता भी दे डाला। फिर हाथ हिलाते आखरी बस पकड़ने निकल पड़े। नफीसा बी जो सुबह से शर्मिन्दा थीं, अब अदब के एक ऊँचे पायदान पर खड़ी थीं। चाचाजी को सुकून था कि उनके उसूलों की जीत हुई।

(स्वर्गीय चाचाजी और चाचीजी को सप्रेम समर्पित। काल्पनिक नाम के लिए मुआफी के साथ।)

पगडंडियाँ

अरविन्द्र कुमार मेश्राम
प्रधान मुख्य सामग्री प्रबंधक

कुछ कच्ची, कुछ पक्की,
जाने कहाँ कहाँ से चलकर आती हैं.
जाने कहाँ कहाँ को जाती हैं,
पगडंडियाँ..........
इस आखिरी पगडंडी पर चलकर
वो लौटा है,
उस वक्त,
जब सूरज रौशनी खोने लगा था ,
रात किवाड़े पे दस्तक दे रही थी,

और
लौट चुके थे,
सब पंछी, अपने ठिकानों तक..
तब वो लौटा है,
बूढ़ी बैसाखी का सहारा लेकर,
अपनी पगडंडी कंधे मे लादे.........

अब इस पर होकर किसी के आने की आस नहीं,
और ना ही,
स्वयं, कहीं जाने की चाह शेष है,
ये अंतिम पड़ाव है.
फिर,
वो स्वयं रह जायेगा यहाँ सदा के लिए,
और,
रह जाएँगी पगडंडियाँ,
ताउम्र कोने मे लिपटी हुई,
टाट पट्टियों की तरह।

कार्य की गुणवत्ता वृद्धि में प्रशिक्षण की भूमिका

शंकर शर्मा
प्राचार्य, तकनीकी प्रशिक्षण केन्द्र

किसी भी प्रोडक्शन यूनिट की प्राथमिकता होती है- कम कीमत पर अच्छी गुणवत्ता वाले उत्पाद तैयार करना और साथ ही अपने उत्पादन लक्ष्य को हासिल करना।

यहाँ तीन बातें सामने आती हैं -

1. उत्पाद की गुणवत्ता बढ़ाना,
2. उत्पाद का लागत मूल्य कम करना, और
3. उत्पादन लक्ष्य प्राप्त करना।

मोटे तौर पर देखा जाए तो ये तीनों लक्ष्य प्राप्त करने के लिए गुणवत्ता पर ध्यान देने की आवश्यकता है। कार्य की गुणवत्ता का सीधा असर उत्पाद की गुणवत्ता पर पड़ेगा। अगर गुणवत्तापूर्ण कार्य किया जाए तो री-वर्क की आवश्यकता नहीं होगी और साथ ही रिजेक्शन में भी कमी आएगी। परिणाम स्वरूप री-वर्क और रिजेक्शन से होने वाली सामग्री की हानि और समय की हानि नहीं होगी और इस प्रकार उत्पाद की लागत के साथ-साथ उत्पादन लक्ष्य प्राप्त करने में भी मदद मिलेगी। अतः अगर ये कहा जाए कि किसी मैन्युफैक्चरिंग यूनिट में गुणवत्ता ही सर्वोपरि है, तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी।

अब बात करते हैं कि कार्य की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए किन पहलुओं पर विचार किया जाना चाहिए-

1. उत्पादन में शामिल प्रक्रियाओं का उचित प्रशिक्षण प्राप्त करना।
2. कार्य निर्देशों (work instructions) का पालन करना।
3. गैर-अनुरूपताओं (Non-conformities) से सीखना।
4. ख़राब कारीगरी और री-वर्क से बचने के लिए चेक लिस्ट प्रणाली लागू करना।
5. सुधार की आवश्यकता वाले सटीक क्षेत्रों पर चर्चा के माध्यम से सीखने की संस्कृति विकसित करना।

इन सभी पहलुओं में एक बात कॉमन है और वह है- कर्मचारी या कार्य बल।

कार्य की गुणवत्ता का कर्मचारी की योग्यता एवं दक्षता से सीधा संबंध है और इसमें प्रशिक्षण की विशिष्ट भूमिका है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए तकनीकी प्रशिक्षण केंद्र, चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना निम्नलिखित विषयों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है, जिसमें आवश्यकता अनुसार अधिकाधिक संख्या में नामांकन कर उन्हें प्रशिक्षित किया जा सकता है:-

1. **सुपरवाइजर के लिए रिफ्रेशर कोर्स-**

यह एक पांच दिवसीय प्रशिक्षण मॉड्यूल है। इस कार्यक्रम के तहत मैकेनिकल शॉप्स पर आधारित पांच मॉड्यूल में तथा इलेक्ट्रिकल शॉप्स पर आधारित तीन मॉड्यूल में सुपरवाइजरों को ट्रेनिंग दी जाती है। इस कोर्स में थ्री फेस लोकोमोटिव के विभिन्न पार्ट्स के विवरण और इनके असेंबली प्रक्रिया एवं प्रमुख उपकरणों के कार्यों की व्याख्या कर विस्तार से बताया जाता है। वित्त वर्ष 2024-25 में अक्टूबर 2024 तक कुल 233 सुपरवाइजरों को इस मॉड्यूल के तहत प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

2. तकनीशियन के लिए रिफ्रेशर कोर्स-

चितरंजन रेलइंजन कारखाना में काम करने वाले तकनीशियनों के लिए निम्नलिखित रिफ्रेशर कोर्स आयोजित किए जाते हैं। इन रिफ्रेशर कोर्सों में व्यावहारिक पहलुओं और कार्य निर्देश (Work Instruction) प्रक्रियाओं पर भी चर्चा की जाती है। वर्तमान वित्त वर्ष में अक्टूबर 2024 तक कुल 312 तकनीशियनों को इन रिफ्रेशर कोर्सों के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

क. मैकेनिकल फिटर्स के लिए रिफ्रेशर कोर्स
ख. इलेक्ट्रिकल फिटर्स के लिए रिफ्रेशर कोर्स
ग. टॉर्किंग ऑपरेशन पर रिफ्रेशर कोर्स
घ. क्रैपिंग ऑपरेशन पर रिफ्रेशर कोर्स
ङ RQMS वेल्डिंग रिफ्रेशर ट्रेनिंग

3. अंतर्राष्ट्रीय रेलवे उद्योग मानक (IRIS) :-

रेल गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली (RQMS) को आई.एस.ओ.-22162 की आवश्यकताओं के अनुसार 25.02.2022 को चि.रे.का. में लागू किया गया था। इसके मानकों की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए तकनीकी प्रशिक्षण केंद्र ने चि.रे.का. के कार्मिकों की दक्षता का उन्नयन करने के उद्देश्य से IRIS पर पाठ्यक्रम शुरू किए हैं। इसके अलावा, IRIS की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वेल्डिंग पर पाठ्यक्रम को संशोधित किया गया है। वर्तमान वित्त वर्ष में अक्टूबर 2024 तक कुल 133 कर्मचारियों को IRIS में प्रशिक्षित किया जा चुका है।

4. व्यावसायिक स्वास्थ्य और संरक्षा प्रबंधन प्रणाली (OHSAS) :-

व्यावसायिक स्वास्थ्य और संरक्षा किसी भी संगठन की बुनियादी जरूरत है। चिरेका ने व्यावसायिक स्वास्थ्य और संरक्षा प्रबंधन प्रणाली में प्रमाणन के लिए OHSAS-18001 से आई.एस.ओ.- 45001 तक की अपनी यात्रा पूरी की है। तकनीकी प्रशिक्षण केंद्र आई.एस.ओ.-45001 की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पाठ्यक्रम चलाता है। वर्तमान वित्त वर्ष में अक्टूबर 2024 तक कुल 340 कर्मचारियों को इसमें प्रशिक्षित किया जा चुका है।

5. पर्यावरण प्रबंधन प्रणाली (EMS)-

सी.एल.डब्ल्यू. एक आई.एस.ओ.-14001 प्रमाणित इकाई है। चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना अपने सभी कर्मचारियों को उनकी पर्यावरणीय भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के बारे में जागरूकता सुनिश्चित करता है और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वर्तमान वित्त वर्ष में अक्टूबर 2024 तक 281 कर्मचारियों को पर्यावरण प्रबंधन प्रणाली (EMS) की ट्रेनिंग दी जा चुकी है।

6. कंप्यूटर एप्लीकेशन एवं एडवांस्ड कंप्यूटर एप्लीकेशन :-

चि.रे.का. में विभिन्न कार्यालयों और उनके कार्यों का कम्प्यूटरीकरण कर दिया गया है, उदाहरण के लिए E-Office, HMIS, HRMS, RESS, UDM आदि। इसलिए, कर्मचारियों को आवश्यकता अनुसार कंप्यूटर एप्लिकेशन पर प्रशिक्षण देना अपरिहार्य है। टी.टी.सी. कर्मचारियों के कंप्यूटर अनुप्रयोग जागरुकता में भी अपनी भूमिका निभा रहा है। वित्त वर्ष 2024-25 में अक्टूबर 2024 तक 91 कर्मचारियों को कंप्यूटर एप्लीकेशन में प्रशिक्षित किया गया है।

7. संरक्षा संबंधी प्रशिक्षण-

कार्यक्षेत्र की संरक्षा संगठनात्मक लक्ष्य की प्राप्ति एवं कार्य की गुणवत्ता के लिए नींव का पत्थर है। चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना कर्मचारियों के संरक्षा से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण प्रदान करता है। वर्तमान वित्त वर्ष में अक्टूबर 2024 तक कुल 1400 कर्मचारियों को निम्नलिखित मॉड्यूल में संरक्षा संबंधी

प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

क. सेफ्टी फॉर ऑल

ख. सेफ्टी फॉर सुपरवाइजर्स

ग. सेफ्टी फॉर क्रेन ड्राइवर

घ. सेफ्टी फॉर रिगिंग स्टाफ

ङ. सेफ्टी इन इलेक्ट्रिकल ऑपरेशंस

च. प्रिवेंशन ऑफ़ फायर एंड फायर सेफ्टी

छ. क्रेन एप्लीकेशन एंड सेफ्टी फॉर सुपरवाइजर्स एंड आर्टिजन

जनवरी 2025 से इन सभी सेफ्टी कोर्सेज को मिलाकर हर महीने एक एकीकृत सेफ्टी प्रोग्राम चलाया जा रहा है ताकि अधिक से अधिक संख्या में कर्मचारियों एवं सुपरवाइजरों को संरक्षा संबंधित प्रशिक्षण दिया जा सके।

8. **विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम-**

कार्यक्षेत्र की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए कर्मचारियों की योग्यता को बढ़ाने के उद्देश्य से तकनीकी प्रशिक्षण केंद्र निम्नलिखित विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है, जिसमें वर्तमान वित्त वर्ष में अक्टूबर 2024 तक कुल 528 कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

क. गैर विनाशकारी परीक्षण (NDT)

ख. एनर्जी मैनेजमेंट

ग. टेंडर और कॉन्ट्रैक्ट

घ. GeM कॉन्ट्रैक्ट

ङ. पोस्ट कॉन्ट्रैक्ट डीलिंग

च. डिले इन आर्बिट्रेशन

छ. स्क्रैप डिस्पोजल

इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी वार्षिक एवं मासिक ट्रेनिंग कैलेंडर के माध्यम से सी.एल.डब्ल्यू. ऑफिशियल वेबसाइट पर तथा सी.एल.डब्ल्यू. INTR-NET वेबसाईट पर उपलब्ध कराई जाती है।

कर्मचारी प्रदर्शन का सबसे महत्वपूर्ण कारक प्रशिक्षण है। प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति प्रशिक्षण रहित व्यक्ति की तुलना में अधिक प्रभावी ढंग से कार्य कर सकता है। प्रशिक्षण से कर्मचारियों और संगठन दोनों की दक्षता और प्रभावशीलता बढ़ती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कर्मचारी प्रशिक्षण के माध्यम से कार्यस्थल पर अपने कौशल, ज्ञान और क्षमताओं में सुधार करने में सक्षम होंगे, जिससे अंततः कार्यस्थल पर प्रदर्शन में सुधार होगा। साथ ही उत्पाद की गुणवत्ता और विश्वसनीयता बढ़ेगी तथा संगठनात्मक लक्ष्य हासिल करना सुलभ होगा।

हरिवंश राय बच्चन के अनमोल विचार

मैं दीवानों का वेश लिए फिरता हूँ,
मैं मादकता निःशेष लिए फिरता हूँ,
जिसको सुनकर जग झूमे, झुके, लहराए,
मैं मस्ती का संदेश लिए फिरता हूँ.

ये समय न लौट के आएगा

हरिओम चौहान
उप मु.वि.इंजी/ई.एल.

बैठ ऑटो की आगे वाली सीट पर, न देख इन काली शीशे वाली गाड़ियों को ।
एक दिन ऑटो में बैठने के लिए तरस जायेगा ।
न देख ट्रेन के एसी कोचेस को, जनरल वाले डब्बे में बैठकर ।
ये जनरल वाले डब्बे का आनंद, फर्स्ट एसी में भी न आएगा।
गिरा ले पर्दे कानों पर कुछ समय के लिए, टाइम तेरा भी आएगा ।
न हिचकिचा, सरकारी लोगों से बात करते हुए ।
एक दिन तू भी क्लास वन अधिकारी बन जायेगा।
खा ले चाव से खाना, इन रोड साइड ढाबों पर ।
ये स्वाद, ताज और आई.टी. सी. होटल में भी न आएगा ।
जी ले इन दोस्तों के साथ, ये हसीन लम्हें,
ये दौर फिर लौट के न आएगा।
भागने दे इस दुनिया को, विचलित न हो अपनी राह से ।
एक दिन, ये रास्ता ही मंजिल तक पहुंचाएगा ।
न बुन, खामखा ख्वाब, किसी की आँखों में देखकर ।
ये राहें है पल भर के लिए साथ, ये मंज़िल तक न पहुँचाएगी।
जी ले इस सराफत को, वक़्त ऐसा बिगड़ेगा कि ये सराफत लौटकर न आएगा ।
ये रेस नहीं है हार-जीत का, ये वक्त है खुद को तरासने का।
जी ले इस पल को खुलकर, ये समय न लौट के आएगा ।

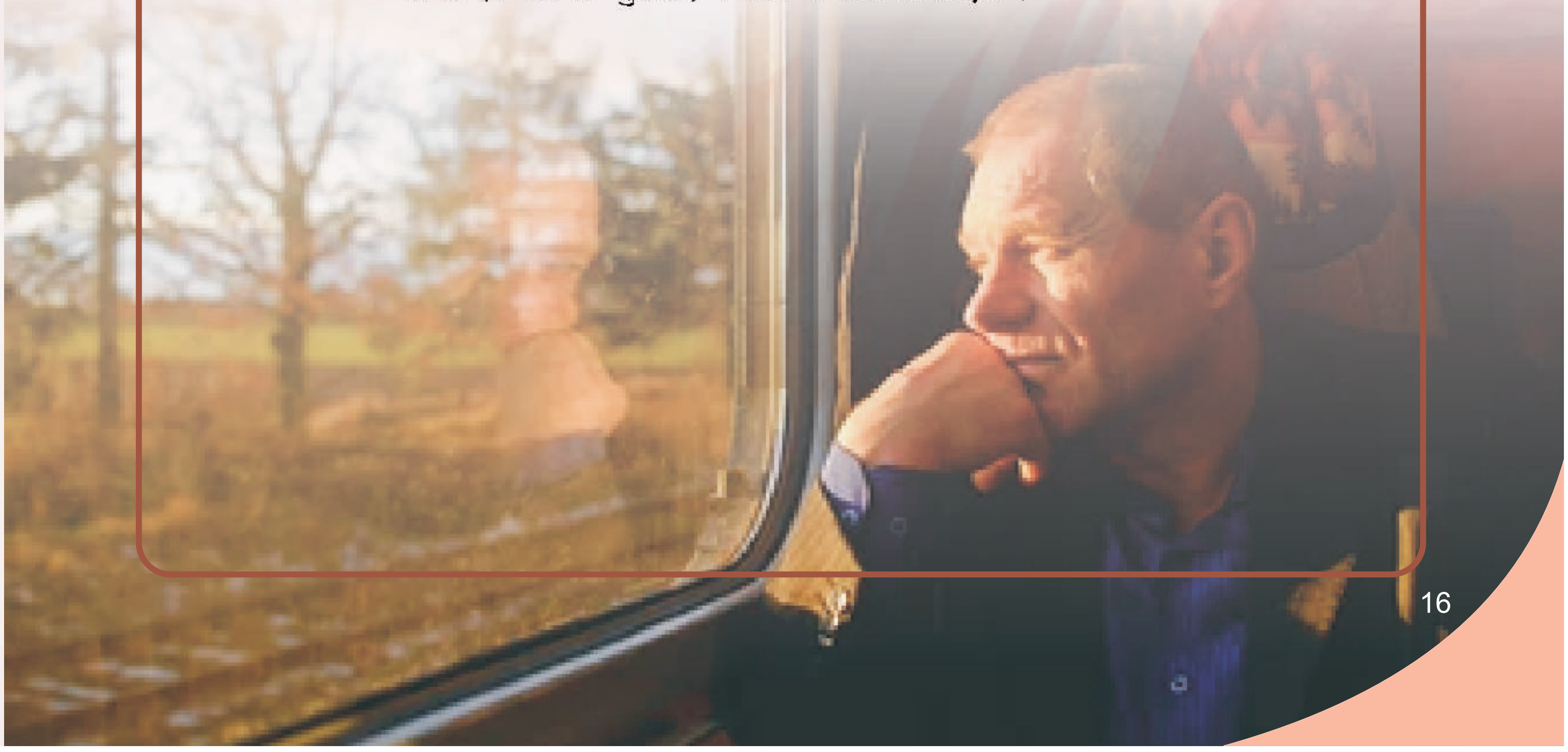

आस्था का महापर्व : कुंभ

डॉ. मधुसूदन दत्त
राजभाषा अधिकारी

प्रिया मित्रों, 13 जनवरी 2025 से प्रयागराज में महाकुंभ पर्व की शुरुआत होने वाली है, तो मैंने सोचा कि इस विषय पर एक लेख तैयार किया जाए जिससे कि पाठकगणों को इसका लाभ मिल सके। सर्वप्रथम हम यह जानें कि कुंभ क्या है। कुंभ शब्द का साधारण अर्थ घड़ा होता है, किंतु यथार्थ में कुंभ शब्द समूची सृष्टि के कल्याणकारी अर्थ को अपने आप में समेटे हुए है। इसके अतिरिक्त अन्य जन- कल्याणकारी भावों को भी कुंभ शब्द के शब्दार्थ में देखा जा सकता है। भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही तीर्थों एवं उसमें होने वाले पर्व विशेष के प्रति आदर तथा श्रद्धा का भाव जनमानस के बीच व्याप्त है। देव-दानव के विवाद रूप में समुद्र के मथे जाने पर कुंभ की उत्पत्ति हुई। देव और दानवों ने पृथ्वी के उत्तर भाग में हिमालय के समीप क्षीरोदसिंधु में मंथन किया, जिसमें मंदराचल मंथन दण्ड था, वासुकी नेती थे, कच्छप रूप धारी भगवान मंदराचल के पृष्ठ भाग थे और भगवान विष्णु उक्त मंथन दंड को पकड़े हुए थे। मंथन के परिणामस्वरूप क्षीरसागर से 14 रत्न निकले जिसमें अमृत कुंभ भी शामिल था। अमृत प्राप्ति के लिए देव तथा दानवों में परस्पर 12 दिनों तक निरंतर घोर युद्ध हुआ था। इस युद्ध के दौरान पृथ्वी के चार स्थानों प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन तथा नासिक में कलश से अमृत की कुछ बूंदे छलक गई थी। देवताओं के 12 दिन पृथ्वी पर मनुष्यों के 12 वर्ष के बराबर होते हैं, इसलिए कुंभ भी 12 होते हैं, जिनमें से चार कुंभ पृथ्वी पर होते हैं और शेष आठ कुंभ देवलोक में होते हैं, जिन्हें देवगण ही प्राप्त कर सकते हैं। हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक इन चारों स्थानों में क्रमशः 12-12 वर्षों पर पूर्ण कुंभ का मेला लगता है, जबकि हरिद्वार तथा प्रयाग में अर्ध कुंभ पर्व भी मनाया जाता है, किंतु यह अर्धकुंभ पर्व उज्जैन और नासिक में नहीं होता।

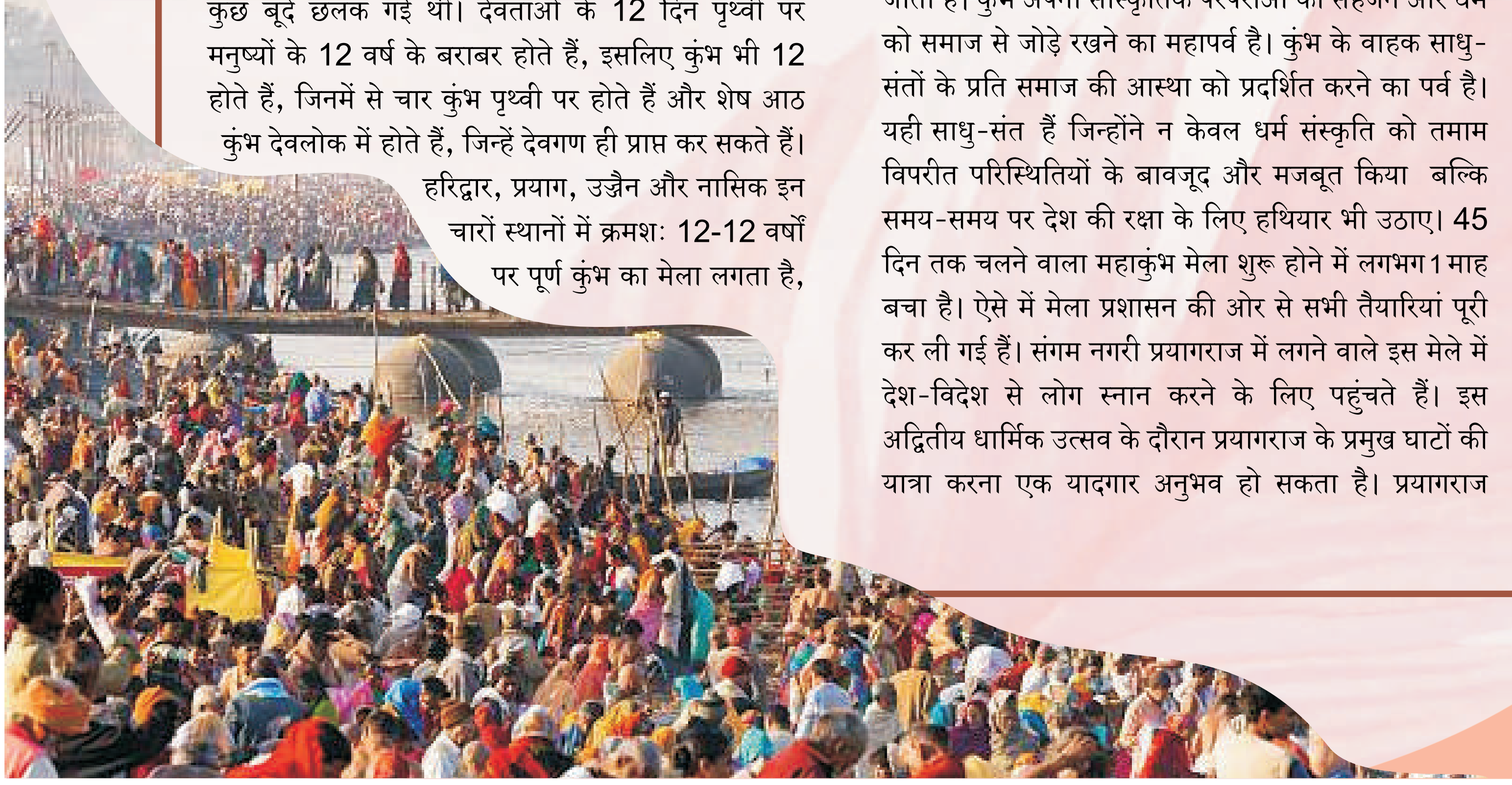

इन चारों स्थानों के कुंभ पर्व का क्रम इस प्रकार निर्धारित है- मेष या वृष के बृहस्पति में जब सूर्य,चंद्रमा दोनों मकर राशि पर आते हैं तब प्रयाग में कुंभ पर्व होता है। इसके पश्चात वर्षों का अंतराल जो भी हो, जब बृहस्पति सिंह में होते हैं और सूर्य मेष राशि पर रहता है तो उज्जैन में कुंभ लगता है। उसी बार्हस्पत्य वर्ष में जब सूर्य सिंह पर रहता है तो नासिक में कुंभ लगता है। तत्पश्चात लगभग छः बार्हस्पत्य वर्षों के अंतराल पर जब बृहस्पति कुंभ राशि पर रहता है और सूर्य मेष पर तब हरिद्वार में कुंभ होता है। इनके मध्य में 6-6 वर्ष के अंतर से केवल हरिद्वार और प्रयाग में अर्ध कुंभ होता है। जनश्रुति है कि कुंभ के दौरान उस स्थान विशेष की नदियों का जल अमृत के समान हो जाता है। महाकुंभ की शुरुआत पौष पूर्णिमा स्नान के साथ होती है, जोकि 13 जनवरी 2025 को है. वहीं, महाशिवरात्रि के दिन 26 फरवरी 2024 को अंतिम स्नान के साथ कुंभ पर्व का समापन होगा। इस तरह से महाकुंभ 45 दिन तक चलता है, जिसकी भव्यता देखते ही बनती है। कुंभ हिंदुओं और दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन माना जाता है। कुंभ अपनी सांस्कृतिक परंपराओं को सहेजने और धर्म को समाज से जोड़े रखने का महापर्व है। कुंभ के वाहक साधु-संतों के प्रति समाज की आस्था को प्रदर्शित करने का पर्व है। यही साधु-संत हैं जिन्होंने न केवल धर्म संस्कृति को तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद और मजबूत किया बल्कि समय-समय पर देश की रक्षा के लिए हथियार भी उठाए। 45 दिन तक चलने वाला महाकुंभ मेला शुरू होने में लगभग 1 माह बचा है। ऐसे में मेला प्रशासन की ओर से सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। संगम नगरी प्रयागराज में लगने वाले इस मेले में देश-विदेश से लोग स्नान करने के लिए पहुंचते हैं। इस अद्वितीय धार्मिक उत्सव के दौरान प्रयागराज के प्रमुख घाटों की यात्रा करना एक यादगार अनुभव हो सकता है। प्रयागराज

अपने पवित्र संगम और सुंदर घाटों के लिए प्रसिद्ध है। मेले के दौरान भीड़-भाड़ के चलते घाट तक पहुंचना काफी मुश्किल हो जाता है। ऐसे में आप चाहें तो प्रयागराज के 3 प्रमुख घाट तक पहुंचने के लिए हमारे बताए रास्ते अपना सकते हैं। इससे आपका समय बचेगा और यात्रा भी यादगार हो जाएगी। आइए जानते हैं इन घाटों और वहां तक पहुंचने के विकल्प के बारे में-

1. **संगम घाट:** प्रयागराज का सबसे प्रमुख घाट संगम घाट है। यहां गंगा, यमुना और सरस्वती तीन नदियां बहने से इसको त्रिवेणी घाट के नाम से भी जानते हैं। मान्यता है कि संगम घाट पर डुबकी लगाने से तीनों नदियों का आशीर्वाद मिलता है। महाकुंभ मेले के दौरान यहां भारी भीड़ उमड़ती है। यहां पहुंचने की बात करें तो प्रयागराज रेलवे स्टेशन से संगम घाट की दूरी लगभग 7 से 8 किलोमीटर है। यहां पहुंचने के लिए आप टैक्सी या शेयरिंग ऑटो ले सकते हैं। संगम घाट पर नाव की सवारी का भी आनंद लिया जा सकता है।

2. **राम घाट:** प्रयागराज के संगम घाट के पास स्थित राम घाट भी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। इस घाट पर बोटिंग की सबसे शानदार सुविधा है। इस घाट पर पहुंचने की बात करें तो राम घाट से संगम घाट की दूरी मात्र 3 मिनट की है। वहीं, प्रयागराज जंक्शन से 6-7 किलोमीटर है। यहां जानें के लिए टैक्सी और शेयरिंग ऑटो उपलब्ध है। शाम के समय यहां होने वाली आरती का दृश्य अत्यंत मनमोहक होता है।

3. **अरैल घाट:** यमुना नदी के किनारे स्थित अरैल घाट प्राकृतिक सुंदरता और शांति के लिए प्रसिद्ध है। हालांकि, महाकुंभ के दौरान यहां भीड़ के कारण शांति का अनुभव करना थोड़ा कठिन हो सकता है। बता दें कि अरैल घाट से संगम घाट सड़क मार्ग द्वारा लगभग 30 मिनट की दूरी पर है। महाकुंभ के दौरान गाड़ियों का आवागमन सीमित हो सकता है, इसलिए पैदल चलकर यहां पहुंचना बेहतर विकल्प हो सकता है।

यूं तो कुंभ के दौरान प्रतिदिन स्नान करने की परंपरा है,किंतु कुछ प्रमुख स्नान जिसे शाही स्नान कहा जाता है, इस प्रकार हैं:

क. 14 जनवरी मकर संक्रांति
ख. 29 जनवरी मौनी अमावस्या
ग. 03 फरवरी बसंत पंचमी
घ. 12 फरवरी माघी पूर्णिमा एवं
ङ. 26 फरवरी महाशिवरात्रि।

विभिन्न अखाड़ों के साधु-सन्यासी इन तिथियों में शाही स्नान करते हैं। इनके स्नान के उपरांत श्रद्धालुगण भी पुण्य स्नान करते हैं।

वस्तुत: पूर्ण कुंभ तथा अर्ध कुंभ पर्व मनाने का रहस्य यह है कि हम लोग इस पर्व पर दूर-दूर से इन पवित्र तीर्थों में आकर गंगा स्नान से पवित्र होकर श्रेष्ठ विद्वानों के उपदेश द्वारा ज्ञान प्राप्त करें तथा तप, सत्य, दान, यज्ञ आदि शुभ कर्मों का आचरण करें, जिससे मृत्यु के बाद हमें सर्वोत्तम, उत्तम या मध्यम गति प्राप्त हो और अधम गति कदापि न मिले।

प्रयागराज में होने वाले इस महाकुंभ के लिए भारतीय रेल ने भी विभिन्न स्थानों से प्रयागराज तक पहुंचने के लिए सामान्य के साथ-साथ विशेष ट्रेनों की भी व्यवस्था की है।

उम्मीद है कि आप भी महाकुंभ के इस महापर्व पर संगम में डुबकी लगाकर पुण्य स्नान का लाभ उठाएंगे।

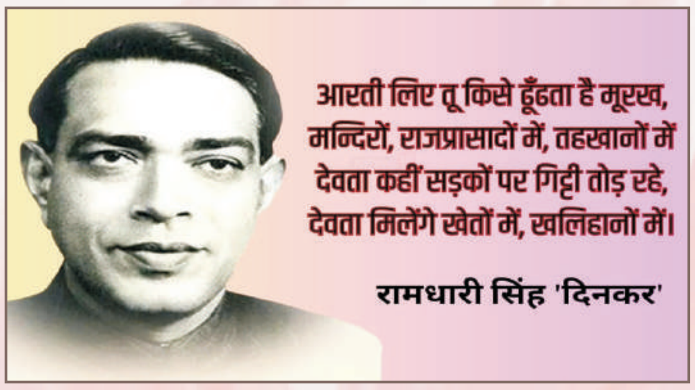

मानव सेवा को समर्पित महिलाएं

साभार
चिरेका महिला कल्याण संगठन

चित्तरंजन रेलनगरी प्रक्षेत्र में सामाजिक विकास सहयोग और सेवा के लिए महिला सशक्तिकरण की बेमिसाल उदाहरण प्रस्तुत कर रहा कल्याणकारी संगठन महिला कल्याण संगठन / चिरेका की भूमिका और सेवाभाव महत्वपूर्ण और सामाजिक जागृति के दृष्टिकोण से प्रेरणादायक रहा है, जो कई दशकों से निःस्वार्थ भाव के साथ असहाय, पीड़ित, पिछड़े और जरूरतमंद लोगों को सहयोग प्रदान कर रहा है। यह संगठन पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा, स्वास्थ्य, आपदा और रोजगार जैसे क्षेत्रों में विभिन्न तरह के अभियान तथा कार्यक्रम संचालित कर जरुरतमंदों की आवश्यक मदद कर लोगों की तरक्की में योगदान दे रहा है।

महिला कल्याण संगठन/चिरेका द्वारा संचालित पिछले कुछ माह के कार्यक्रमों की चर्चा की जाय तो इनके सेवा भाव के मूलमंत्र को समझने में देर नहीं लगेगी।

स्वास्थ्य और स्वच्छता को लेकर संगठन की पूर्व अध्यक्षा श्रीमती नमिता मल्होत्रा के कुशल नेतृत्व और मार्गदर्शन में विविध कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किये गए, जिसने स्कूली छात्राओं और महिला श्रमिकों को जागरूक करने का काम किया। चिरेका स्थित डीबी गर्ल्स स्कूल की 50

छात्राओं के बीच चिरेका महिला कल्याण संगठन के द्वारा 100 पैकेट सेनेटरी पैड नैपकिन का वितरण किया गया।

पर्यावरण संरक्षण और संतुलन के लिए विभिन्न कार्यक्रमों के दौरान अनेकों पौधे लगाकर हरियाली का संदेश दिया। विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर संगठन द्वारा 07.06.2024 को चित्तरंजन क्लब प्रांगण में सामूहिक रूप से पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रकार के फलदार, फूलदार और औषधीय पौधे लगाए। चित्तरंजन रेलनगरी स्थित चितरंजन देश बंधु बालिका उच्च विद्यालय में 15 सितंबर 2024 को स्कूली बच्चों के बीच एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कुल 67 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। रेल बोर्ड के दिशा

निर्देश में आयोजित इस प्रतियोगिता में तीन ग्रुप में विभिन्न उम्र वर्ग के बच्चों ने भाग लिया। संगठन द्वारा विजेता स्कूली बच्चों को 22 सितंबर 2024 को संध्या में एक समारोह के दौरान पुरस्कृत किया गया। श्री हितेंद्र मल्होत्रा, पूर्व महाप्रबंधक/चिरेका के गरिमामयी उपस्थिति और महिला कल्याण संगठन/चिरेका की पूर्व अध्यक्षा श्रीमती नमिता मल्होत्रा के नेतृत्व में आयोजित इस पुरस्कार वितरण समारोह में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को गणमान्य अतिथियों के कर कमलों से प्रशस्ति पत्र और कैश अवार्ड प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम में बच्चे और उनके माता-पिता अति प्रसन्न दिखे।

17 सितंबर को विश्वकर्मा पूजा का आयोजन आस्था और उल्लास के साथ किया गया। इस मौके पर श्री हितेंद्र मल्होत्रा, पूर्व महाप्रबंधक/चिरेका संगठन की पूर्व अध्यक्षा श्रीमती नमिता मल्होत्रा ने विभिन्न शॉप और पूजन स्थानों जैसे मसाला सेंटर ,वाटर सप्लाई और ड्रेनेज सिस्टम इत्यादि विभिन्न कार्यालयों का भ्रमण किया और भगवान विश्वकर्मा का दर्शन कर पूजा अर्चना की। पूर्व अध्यक्षा महोदया ने साज-सज्जा और आकर्षक झाँकियों की खूब सराहना की। इस मौके पर भी स्टील फाउंड्री के समक्ष स्थित कैंपस में महाप्रबंधक महोदय एवं अध्यक्षा महोदया सहित

अन्य अधिकारियों ने पौधारोपण किया। यह पर्यावरण की बेहतरी के लिए किए जा रहे प्रयासों का अनुपम उदाहरण है।

चित्तरंजन क्लब प्रांगण में 01 अक्टूबर 2024 को महिला कल्याण संगठन द्वारा दुर्गा पूजा के अवसर पर उपहार एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में श्रीमती नमिता मल्होत्रा ने संगठन द्वारा संचालित विभिन्न केंद्रों के कुल 47 कर्मचारियों को दुर्गा पूजा के उपलक्ष्य में बोनस राशि, वस्त्र और मिठाई भेंट करते हुए इनका उत्साहवर्धन किया।

संगठन द्वारा संचालित आशा किरण केंद्र में 03.12.2024 को इस वर्ष की थीम ''समावेशी और टिकाऊ भविष्य के लिए विकलांग व्यक्तियों के नेतृत्व को बढ़ाना'' विषय पर

अंतरराष्ट्रीय दिव्यांग दिवस मनाया गया। इस मौके पर श्रीमती नमिता मल्होत्रा, पूर्व अध्यक्षा, चिरेका महिला कल्याण संगठन के द्वारा केंद्र में अध्ययनरत 14 छात्र-छात्राओं को पठन-पाठन सामग्री और जलपान सामग्री वितरित किए गए।

अंतरराष्ट्रीय दिव्यांग दिवस कार्यक्रम के मौके पर पूर्व अध्यक्षा महोदया द्वारा कुल 5 कर्मचारियों को कैश अवार्ड देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर चित्रांकन प्रतियोगिता में बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले तीन विजयी प्रतिभागियों को भी पुरस्कार प्रदान किया गया।
इसके अलावा संगठन द्वारा बाल शिक्षा के महत्व को बढ़ावा देने के लिए रेल नगरी में शिशु विहार विद्यालय का संचालन किया जा रहा है। स्वरोजगार और महिला सशक्तिकरण के प्रति दृढ़ संकल्प को फलीभूत करते हुए मसाला सेंटर का संचालन किया जा रहा है। जहाँ अनेकों महिलाएं स्वरोजगार से जुड़कर अपनी **और अपने परिवार का भविष्य संवार रही हैं। मजबूती और एकजुटता के साथ इन दायित्वों के निर्वाह में पूर्व अध्यक्षा महोदया के साथ साथ कदम से कदम मिलाकर संगठन के अन्य अधिकारियों और सदस्याओं ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।**

मोबाइल - एक आवश्यक अभिशाप

हरपाल सिंह
वरि. अनुवादक/राजभाषा विभाग

मोबाइल फ़ोन वर्तमान जीवन की ज़रूरत बन गए हैं, लेकिन कहीं न कहीं आजकल इसका सही तरीके से इस्तेमाल नहीं किया जा रहा है। मोबाइल तकनीकी रूप से उन्नत है और इसके माध्यम से हाई-टेक गेम, रेडियो और इंटरनेट, सूचना का आदान-प्रदान और डाउनलोडिंग आदि जैसे कई विकल्प मिलते हैं। मानव समाज में युवा से लेकर वृद्ध तक हर कोई अलग-अलग उद्देश्यों के लिए मोबाइल फ़ोन का इस्तेमाल करता है। लेकिन किशोर व बालक इसका इस्तेमाल टेक्स्टिंग, संगीत, गेम और नेट सर्फिंग के लिए करते हैं।

आज हमने सेल फोन पर निर्भर होना शुरू कर दिया है। सुबह सवेरे सोकर जागने से लेकर देर रात तक सोने से पहले हम कई तरीके से मोबाईल फोन का उपयोग करते हैं, मानों पृथ्वी के पंचतत्व के बाद मोबाईल फोन ने ही छठा तत्व होने की संज्ञा पा ली है। एक टच अलार्म बजता है और हम जाग जाते हैं, आसान बातचीत संभव है, हमें सचेत करने के लिए रिमाइंडर और नोट्स, दूरी को कम करने के लिए सोशल चैट, वास्तविक नेविगेशन के लिए जी. पी. एस., सूचनाओं की खोज के लिए इंटरनेट, तस्वीरों को सहेजने के लिए कैमरा और व्यावसायिक कार्यों के लिए ईमेल व विडिओ कॉन्फ्रेन्स, हम सभी के जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान पा चुका है। परंतु इसके साथ ही आज के दौर में यह एक ऐसा साधन भी बन चुका है जो ध्यान भटकाने से लेकर हमारी गरिमा को ठेस पहुंचाना और जीवन व संपत्ति को नुकसान पहुंचाने का काम कर सकता है।

व्यक्तिगत जीवन से संबंधित सूचना व तस्वीरों के आसानी से उपलब्ध होने से अब हम सुरक्षित नहीं हैं, क्योंकि हमारा सामाजिक जीवन पूरी तरह से नष्ट हो सकता है। कोई व्यक्तिगत दूरी नहीं, कोई गोपनीयता नहीं, क्योंकि कोई भी सोशल साइट्स के जरिए हमारे जीवन में सेंध लगा सकता है। इससे गलत आदतें भी पैदा हो सकती हैं जैसे डेटा हैक करना, डिजीटल अरेस्ट अनचाहे ब्लैंक/फर्जी कॉल आदि।

माता-पिता किशोरों की सेल फोन की लत से बहुत परेशान हैं क्योंकि वे अपने फोन को हर जगह अपने साथ रखते हैं जैसे खाने-पीने, पढ़ाई, शॉपिंग, स्कूल/कॉलेज आदि में। इसने उनमें गलत आदतों को बढ़ावा दिया है। कई बार छात्र परीक्षा केंद्र में अपने साथ सेल फोन लेकर परीक्षा में नकल करते पाए जाते हैं। माता-पिता की आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना आजकल बच्चे महँगे स्मार्ट फोन की अनावश्यक माँग करते हैं। आजकल के दौर में मोबाइल फोन तो स्मार्ट हो रहे हैं लेकिन हमारी स्मरण शक्ति क्षीण होती जा रही है। इसका जीवंत उदाहरण है कि मोबाइल फोन के स्मार्ट होने से पूर्व एक - एक व्यक्ति को अनेकों दूरभाष नंबर स्मरण रहते थे लेकिन आज ऐसा भी देखने को मिलता है कि व्यक्ति को अपने सगे-संबंधियों के नंबर याद नहीं रहते हैं।

बिना समझ के मोबाइल फोन के प्रयोग से निम्न नकारात्मक प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ सकते हैं-

※ गोपनीयता के लिए खतरा - दुर्भावनापूर्ण ऐप और वेबसाइटः मोबाइल फोन पर दुर्भावनापूर्ण ऐप्लिकेशन (मैलवेयर) और वेबसाइटें इंस्टॉल हो सकती हैं। ये ऐप्स डेटा चोरी करने, डेटा एन्क्रिप्ट करने और कई तरह के और काम कर सकते हैं। फिशिंगः फिशिंग हमलों में, ईमेल, एसएमएस, सोशल मीडिया जैसे माध्यमों से डेटा चोरी किया जाता है या दुर्भावनापूर्ण सामग्री भेजी जाती है। मैन-इन-द-मिडिल हमले : मोबाइल संचार में हमेशा सुरक्षित प्रौद्योगिकियों का इस्तेमाल नहीं होता, जिससे डेटा में बदलाव किया जा सकता है या उसे गुप्त रूप से सुना जा सकता है। ड्राइव-बाय डाउनलोडः गलत वेबसाइट पर जाने या गलत ईमेल खोलने से, आपके डिवाइस पर बिना आपकी जानकारी के मैलवेयर इंस्टॉल हो सकता है। स्मिशिंग और विशिंगः स्मिशिंग में, टेक्स्ट के ज़रिए फिशिंग की जाती है। विशिंग में, फोन पर वॉयस फिशिंग की जाती है।

※ संपत्ति के लिए खतरा - आज के दौर में बैंक खाता खुलवाने के लिए हमें बैंक जाने तक की जरूरत नहीं है। केवल मोबाइल व तकनीक का उपयोग कर बैंक से संबधित कार्य मनुष्य घर बैठे करने लगा है, जिससे समय की बचत तो हुई है परंतु व्यक्ति की सारी जानकारी खुले बाजार (ओपन मार्केट) में उपलब्ध हो जाती है, जिसे माध्यम बनाकर फ्रॉड करने वाले विभिन्न तरीकों से धोखा-धड़ी करने का जाल बुनते रहते हैं और हमारी एक छोटी-सी भूल हमारी संपत्तियों के लिए बड़ा खतरा साबित होती है।

※ स्वास्थ्य के लिए खतरनाक - मोबाइल फोन से न केवल संपत्ति का ही खतरा होता है बल्कि मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति स्वास्थ्य के लिए भी इससे खतरा बना रहता है। लगातार मोबाइल फोन के इस्तेमाल से छोटे बच्चों में ऑटिजम जैसी समस्याएं देखना आज आम बात हो चुकी है। इसके अलावा आज व्यक्ति समाज से एकांत हो गया है जिससे तनाव के स्तर में बढ़ोत्तरी देखी गई है। मोबाइल फोन से पूर्व व्यक्ति मनोरंजन के लिए अनेकों प्रकार के खेल घर से बाहर खेलता था, जिससे शारीरिक गतिविधि करने के प्रचुर अवसर मिलते थे। परंतु आज सभी खेल मोबाइल फोन के माध्यम से ही खेले जा रहे हैं। परिणामतः शारीरिक गतिविधियों में कमी देखने को मिली है। इसके अलावा आँखों पर तनाव और डिजिटल आई सिंड्रोम, मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव और खराब मुद्रा और मस्कुलोस्केलेटल समस्याएं भी मोबाइल फोन के अत्यधिक प्रयोग से होने लगती हैं।

※ बुरी आदतों को आमंत्रण - मोबाइल फोन के बहुत अधिक प्रयोग से आजकल व्यक्ति में अनेकों बुरी आदतों ने अपने पैर जमा लिए हैं, जिससे होने वाली क्षति का अनुमान वर्तमान पीढ़ी के लिए लगाना काफी मुश्किल है और यह भी कह सकते हैं कि आज के इस तकनीकी युग में इन बुरी आदतों से होने वाले खतरों की ओर व्यक्ति का ध्यान जाता ही नहीं है। मोबाइल फोन के कारण विकसित होने वाली कुछ आदतें निम्न हैं:

- **लगातार अपना फ़ोन चेक करना**

टेक्स्ट, अलर्ट और नोटिफिकेशन के बीच, आप शायद हर पाँच सेकंड में अपना फ़ोन देखने के लिए ललचाते होंगे। समस्या यह है कि बहुत ज़्यादा बार चेक करने से आपके ध्यान केंद्रित करने की क्षमता कम हो सकती है।

- **सोशल मीडिया पर जुनूनी होना**

चाहे आप अपने दोस्त की परफेक्ट फेसबुक लाइफ़ से निराश हों, या इंस्टाग्राम पर दो घंटे बर्बाद करने के लिए दोषी महसूस कर रहे हों, सोशल मीडिया आपके मूड को प्रभावित कर सकता है। और जितना ज़्यादा आप इसका इस्तेमाल करेंगे, यह उतना ही ख़राब हो सकता है।

- **सोने से पहले मोबाईल स्क्रीन स्क्रॉल करना**

अगर आप हाल ही में बेचैन महसूस कर रहे हैं, तो इसका कारण आपका स्मार्टफोन हो सकता है। शोध में पाया गया है कि सोने के समय से एक घंटे पहले फोन का इस्तेमाल करने से नींद में खलल पड़ सकता है, जिससे नींद आना और झपकी लेना मुश्किल हो जाता है।

- **अपने आस-पास की चीज़ों को नज़रअंदाज़ करना**

डिवाइस हमारी एकाग्रता को भंग कर सकते हैं और हमारे आस-पास की चीज़ों के बारे में हमारी जागरूकता को कम कर सकते हैं, जिससे हमारे चलने और ड्राइविंग कौशल से लेकर बातचीत करने की हमारी क्षमता तक सब कुछ खराब हो सकता है। इसलिए, जब आप कोई ऐसा काम कर रहे हों जिसमें पूरा ध्यान देने की ज़रूरत हो, तो अपना फोन दूर रखें। प्रलोभन से बचने के लिए, शुरू करने से पहले ही इसे किसी ऐसी जगह पर रख दें जहाँ पहुँचना मुश्किल हो।

- **घंटों तक अपने फोन को घूरते रहना**

स्मार्टफोन के प्रति आपका जुनून भले ही आपको अंधा न करे, लेकिन यह आपकी दृष्टि के लिए अच्छा नहीं है। अमेरिकन एकेडमी ऑफ ऑप्थाल्मोलॉजी के अनुसार, स्क्रीन पर अधिक समय बिताने से हम अपनी पलकें उतनी नहीं झपका पाते, जितनी हमें झपकाना चाहिए, जिससे आंखों में सूखापन, आंखों में तनाव, धुंधली दृष्टि और थकान की समस्या होती है। जिन बच्चों की आंखें अभी विकसित हो रही हैं, उन्हें भी ड्राई-आई डिजीज का खतरा होता है।

अतः मोबाइल फोन तकनीक का आविष्कार मानव जीवन को आसान बनाने हेतु किया गया था, और अपने उस उद्देश्य में मोबाइल फोन काफी हद तक सफल भी हुआ है जो इसे एक महान आविष्कार बनाता है। मोबाइल फोन मानव जीवन के अनेकों पहलुओं पर बहुत उपयोगी साबित होता है, लेकिन ये सुनिश्चित करें कि इसका नियंत्रण आपके हाथों में हो कहीं ये आपके जीवन का नियंत्रक न बन जाए।

"बुद्धिमान लोग हमेशा स्वेच्छा से ही सही रास्ते पर चलते हैं।"
- हजारी प्रसाद द्विवेदी

फोटोग्राफी : यादों की तस्वीर

श्रेया घोष हाजरा
कार्यालय अधीक्षक, कार्मिक

लम्हों को कैद करने का एक हुनर है,
फोटोग्राफी में छुपा जीवन का असर है।
शटर की आवाज़ से जो जादू चलता है,
हर तस्वीर में एक नया किस्सा बनता है।

प्रकृति के रंगों को दिल में सजाती है,
सूरज की किरणें और चाँदनी लहराती है।
पत्तों पर गिरी ओस की बूँदों की चमक है,
हर फ्रेम में दिखती झलक जीवन की है।

कभी मुस्कान को कैमरे में समेटती है,
कभी आँखों के आँसुओं की कहानी कहती है।
हर भाव को अपने कैनवस में सजाती है,
फोटोग्राफी दिल की गहराई दिखाती है।

सपनों के पीछे भागता यह संसार है,
तस्वीरों में मिलती सच्चाई का आकार है।
हर क्लिक में छिपा अनमोल समय होता है,
हर फोटो सजाती जीवन का संसार है।

यह सिर्फ कला नहीं, एक एहसास है,
हर तस्वीर में छुपा दिल का विश्वास है।
पलकों में बसा जो पल फिसल जाता है,
फोटोग्राफी उसका एहसास दिलाता है।

यादों के पन्ने ये हमें थमाती है,
जीवन का हर क्षण सँजो जाती है।
फोटोग्राफी, एक नजरिया अनमोल है,
जो आपके साथ और बाद भी रहती अनमोल है।

अभी बाकी है

भगवान दास
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक
दे. विद्यालय (बालक)

इम्तिहान पे इम्तिहान दिए जा रहे हैं,
शेष जीवन में कुछ इम्तिहान अभी बाकी है।
'संघर्ष ही जीवन है', संघर्ष करते रहें,
फिलहाल इनसे परित्राण अभी बाकी है।
सुख-दुख के लम्हे भोग लिए हमने,
शेष साँसों में भरने को मुस्कान अभी बाकी है।
मेरी दृष्टि में सृष्टि की हर चीज अच्छी है,
ऐसे दृष्टिकोण वाले होना इंसान अभी बाकी है।
कुछ लोग चेहरे पर मुखौटे लगाए हुए हैं,
भीड़ में अपनों की पहचान अभी बाकी है।
औलाद जब दे देते हैं माँ-बाप को धोखा,
साथ निभानेवालों का एहसान अभी बाकी है।
शरीर स्वस्थ रहे और शौक जिंदा,
तो बुलंद हौसलों की उड़ान अभी बाकी है।
अभी तक जिये तो सपनों के लिए जिये,
खुद के लिए कुछ अरमान अभी बाकी है।
जीते जी जो मिला ठीक है, पर मरने के बाद,
'भगवान' के फैसले का सम्मान अभी बाकी है।

नागरिक सुरक्षा

शरत चन्द्र महतो
कार्यालय अधीक्षक, जिग एवं टूल

नागरिक सुरक्षा नागरिक आबादी द्वारा अपनाए गए योजनाबद्ध उपाय हैं। सरकार, स्थानीय स्व- संस्थाएं, स्वैच्छिक एजेंसियां आदि युद्ध के दौरान एवं युद्ध के पश्चात दुश्मन की कार्रवाई के प्रभाव को कम करने के लिए देश के नागरिकों और देश की संपत्ति पर प्रभाव डालती हैं और इस प्रकार ये उपाय देश और उसके सशस्त्र बलों को युद्ध के मैदान में युद्ध जीतने में मदद करते हैं। नागरिक सुरक्षा अनिवार्य रूप से नागरिकों द्वारा नागरिकों की सुरक्षा के उपाय है। यह आम जनता और स्थानीय प्राधिकरण के साथ मिल कर काम करती है। सुरक्षा एक सैन्य शब्द है और यह हमेशा प्रगतिशील होता है। सुरक्षा हमेशा अच्छी तरह से योजनाबद्ध होनी चाहिए। अधिकांश देशों में नागरिक सुरक्षा स्वैच्छिक आधार पर आयोजित की जाती है। यह एक अजीब मनोवैज्ञानिक घटना है कि जैसे ही कोई देश युद्ध में शामिल होता है, वहाँ लोगों के बीच देशभक्ति की भावना पैदा हो जाती है। इसलिए, नागरिक सुरक्षा शांति के समय में अच्छी तरह से योजनाबद्ध होनी चाहिए, ताकि युद्ध के समय हर किसी का समर्थन प्राप्त कर सके।

उद्देश्य

युद्ध का अंतिम उद्देश्य शत्रु पर अपनी राष्ट्रीय इच्छा को थोपना है। यह युद्ध के मैदान में उसके सशस्त्र बलों को नष्ट करके और युद्ध का सामना करने की उसकी क्षमता को कम करके, नागरिक आबादी को हतोत्साहित करके, उद्योगों और संचार के साधनों को नष्ट करके किया जाता है। सशस्त्र बलों द्वारा सैन्य रक्षा की गतिविधि का उद्देश्य दुश्मन के बमवर्षकों को उनके लक्ष्य तक पहुँचने से पहले ही नष्ट करना और बम गिराना है। लेकिन किसी भी सक्रिय प्रणाली के लिए सभी दुश्मन बमवर्षकों आदि पर बमबारी करने में सफल हो जाते हैं।

नागरिक आबादी का मनोबल, राष्ट्र के युद्ध प्रयासों पर बहुत प्रभाव डालता है और राष्ट्रीय मनोबल को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लेकिन लगातार हवाई हमले के परिणामस्वरूप जान-माल का का काफी नुकसान होता है, जो नागरिक आबादी के मनोबल पर हमेशा प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।

इसलिए, दुश्मन के हवाई हमलों से होने वाली पीड़ा को कम करने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए। सभी नागरिक सुरक्षा उपायों का उद्देश्य मानव जीवन और संपत्ति की रक्षा करना और उत्पादन की निरंतरता बनाए रखते हुए मनुष्य और सामग्री पर दुश्मन की कार्रवाई के प्रभाव को कम करना है।

नागरिक सुरक्षा की अवधारणा

आपातकालीन स्थितियों से निपटने, जनता की सुरक्षा करने और आपदा से नष्ट या क्षतिग्रस्त हुई महत्वपूर्ण सेवाओं और सुविधाओं को तत्काल बहाल करने के लिए नागरिक सुरक्षा उपायों की अभिकल्पना की गई है। ऐतिहासिक रूप से, 1962 में आपातकाल की घोषणा तक भारत सरकार की नागरिक सुरक्षा नीति, राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को नागरिक सुरक्षा उपायों की आवश्यकता के बारे में जागरूक करने हेतु तत्कालीन आपातकालीन राहत संगठन (ERO) को सौंपा गया था। इनकी गतिविधियाँ प्रमुख शहरों और कस्बों तक ही सीमित थी। परंतु 1962 में चीनी आक्रमण और 1965 में भारत-पाक संघर्ष ने नागरिक सुरक्षा की नीति और दायरे के बारे में पुनर्विचार करने पर मजबूर कर दिया। नागरिक सुरक्षा अधिनियम, 1968 (27 मई 1968 को) संसद द्वारा पारित किया गया। यह अधिनियम पूरे भारत पर लागू होता है और अन्य बातों के अलावा, वास्तविक युद्ध, भारत या उसके क्षेत्र के किसी भी हिस्से में किसी भी व्यक्ति, संपत्ति, स्थान या सामग्री को किसी भी शत्रुतापूर्ण हमले से सुरक्षा प्रदान करने के लिए, चाहे वह हवाई, ज़मीन, समुद्र या अन्य माध्यमों से हो, या किसी ऐसे हमले के प्रभावों को पूरी तरह से या आंशिक रूप से कम करने के लिए उपाय प्रदान करता है, चाहे ऐसे उपाय हमले से पहले, हमले के दौरान या हमले के बाद किए गए हों। इसने नागरिक सुरक्षा कोर की स्थापना और नागरिक सुरक्षा के लिए नियम और विनियम बनाने को भी अधिकृत किया।

अधिनियम और नीति

नागरिक सुरक्षा अधिनियम, 1968 को नागरिक सुरक्षा (संशोधन) अधिनियम, 2009 द्वारा अधिसूचना संख्या 3/2010 द्वारा उपयुक्त रूप से संशोधित किया गया है, ताकि नागरिक सुरक्षा कोर के लिए एक अतिरिक्त भूमिका के रूप में आपदा प्रबंधन को शामिल किया जा सके, जबकि इसकी प्राथमिक भूमिका बरकरार रखी जा सके। आपदा प्रबंधन में अतिरिक्त भूमिका नागरिक सुरक्षा कर्मियों द्वारा आपदाओं या आपदाओं से उत्पन्न आपात स्थितियों से पहले, उनके दौरान और बाद में निभाई जाएगी, चाहे वे प्राकृतिक हों या मानव निर्मित। यद्यपि नागरिक सुरक्षा अधिनियम, 1968 पूरे देश में लागू है, लेकिन संगठन केवल ऐसे क्षेत्रों में स्थापित किया गया है, जिन्हें दुश्मन के हमले के दृष्टिकोण से सामरिक और रणनीतिक रूप से कमजोर माना जाता है।

संशोधित भूमिका

नागरिक सुरक्षा का उद्देश्य जीवन बचाना, संपत्ति के नुकसान को कम करना, उत्पादन की निरंतरता बनाए रखना और लोगों का मनोबल ऊँचा रखना है। युद्ध और आपात स्थितियों के दौरान, नागरिक सुरक्षा संगठन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जिसमें आंतरिक इलाकों की रक्षा करना, सशस्त्र बलों का समर्थन करना, नागरिकों को संगठित करना और स्थानीय प्रशासन की मदद करना शामिल है। पिछले कुछ वर्षों में नागरिक सुरक्षा की अवधारणा पारंपरिक हथियारों से होने वाले नुकसान के प्रबंधन से हटकर परमाणु हथियारों, जैविक और रासायनिक युद्ध और प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदाओं के खिलाफ

खतरे की धारणाओं को भी शामिल करने लगी है।

चिरेका / चित्तरंजन में नागरिक सुरक्षा संगठन

चित्तरंजन में नागरिक सुरक्षा संगठन की स्थापना 23 जनवरी 1979 को की गई थी। तब से लेकर आजतक चित्तरंजन में नागरिक सुरक्षा संगठन अपनी कर्तव्यों का पालन करते हुए विभिन्न सेवाएं प्रदान करते आ रही है। नागरिक सुरक्षा की मुख्य 12 सेवाएं हैं।

1. मुख्यालय सेवा
2. वार्डन सेवा
3. अग्निशमन सेवा
4. दुर्घटना
5. संचार सेवा
6. प्रशिक्षण सेवा
7. बचाव सेवा
8. कल्याण सेवा
9. डिपो एवं परिवहन सेवा
10. भ्रंश उद्धार सेवा
11. शव निपटान सेवा
12. आपूर्ति सेवा

चिरेका नागरिक सुरक्षा संगठन के स्वयंसेवक लगभग सभी सेवाओं में पारंगत हैं। चिरेका नागरिक सुरक्षा संगठन प्रत्येक वर्ष 23 जनवरी को चित्तरंजन स्थित नियंत्रण केंद्र कार्यालय में स्थापना दिवस मनाती है। इसके आलावा 26 जनवरी को चिरेका, ओवल मैदान में गणतंत्र दिवस परेड, 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस परेड में भाग लेती है और 06 दिसम्बर को राष्ट्रीय नागरिक सुरक्षा दिवस बढ़े ही धूम- धाम से मनाती है।

■

राजभाषा नियम 1976 (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग)

नियम 10 (2) -

यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों / अधिकारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है ।

नियम 10 (4) -

केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों के अस्सी प्रतिशत कर्मचारियों / अधिकारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे -

परन्तु, यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख से उप-नियम 2. में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा ।

भारतीय रेल : एक नया दौर

संजीव कुमार सिंह
कनिष्ठ लिपिक, जनसंपर्क विभाग

हमारा देश आजादी के स्वर्णिम वर्ष का उत्सव मना रहा है। इसके साथ ही भारतीय रेल ने भी आजादी के स्वर्णिम साल में प्रवेश कर लिया है। वर्तमान में भारतीय रेल अमृत दौर से गुजर रहा है और नित नए अध्याय लिख रहा है। रेल यात्रा के ऐतिहासिक सफर पर रेलवे देशवासियों के लिए कई नए सेवाओं के सफर का शुभारंभ कर चुका है। देश की विरासत, आधुनिकता और विकास के प्रतीक के रूप में चर्चित देश की सबसे बड़ी यात्री परिवहन सेवा क्षेत्र में रेल इंजन से लेकर रेलगाड़ियाँ और रेलवे सेवाओं से जुड़ी अन्य सुविधाओं को विकसित किया गया है। देशभर के सैकड़ो रेलवे स्टेशन को अमृत भारत स्टेशन के रूप में विकसित किया जा रहा है। हाई स्पीड एवं अत्यधिक सेवाओं से लैस वंदे भारत और अमृत भारत ट्रेन तथा रेल इंजन सहित रेल कोचों की सेवाएं रेल यात्रा की नई क्रांति की शुरुआत कर चुका है। हमारे देश की जीवन रेखा और परिवहन यात्रा की विराट इकाई भारतीय रेल ने शुरुआत से ही लगातार तरक्की के सफर को जारी रखा है। आजादी के अमृत महोत्सव काल में भारतीय रेल अपने सफलता की चरम सीमा पर है। पहले जमीन उसके बाद जमीन के अंदर और अब पानी में भी सफर की शुरुआत कर दी गई है। अंडरवाटर ट्रेन इस नए अध्याय के शुरुआत की सबसे खूबसूरत पहल है जो रेल यात्रा के नए एहसास का आगाज है। भारतीय रेल का यह प्रयास देश ही नहीं बल्कि विश्व रेल के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित हो रहा है। जिसपर समस्त देशवासियों को गर्व है।

नदी के नीचे रेल यात्रा : प्राचीन भारत की राजधानी और पश्चिम बंगाल के वर्तमान राजधानी मेट्रो सिटी कोलकाता में भारत की पहली अंडरवाटर मेट्रो ट्रांसपोर्टेशन टनल से यात्रा की शुरुआत, लोगों के लिए किसी सपने के सच होने से कम नहीं है। इस चमत्कारी यात्रा की शुरुआत ने रेल परिवहन यात्रा के नए अध्याय का मार्ग खोल दिया है। ईस्ट वेस्ट मेट्रो कॉरिडोर इंजीनियरिंग का एक बेजोड़ नमूना प्रस्तुत कर रहा है। सुप्रसिद्ध हुगली नदी के नीचे मेट्रो ट्रेन में यात्रा का सफर भारत के एक नई तकनीकी विकास का सबसे ताजा उदाहरण है। जानकारी के अनुसार परियोजना का मुख्य उद्देश्य कोलकाता और इसके उपनगरीय क्षेत्र में लाखों यात्रियों को सस्ता सुगम एवं तीव्र परिवहन उपलब्ध कराना तथा कोलकाता हावड़ा और साल्ट लेकर के यातायात परिदृश्य में परिवर्तन करना है। इस परियोजना का सबसे रोचक

विशेषता हुगली नदी के नीचे बनी लंबी सुरंग है। यह भारत के किसी भी विशाल नदी के नीचे तैयार अपनी तरह की पहली मेट्रो परिवहन सुरंग है। 16.55 किलोमीटर लंबी ईस्ट वेस्ट मेट्रो कॉरिडोर को वर्ष 2008 में सरकार द्वारा मंजूरी प्रदान की गई थी। वर्ष 2008 से लेकर फरवरी महीना वर्ष 2024 तक इस परियोजना पर 8975 करोड़ रुपए खर्च किए गए। पश्चिम बंगाल के दो पुराने शहर हावड़ा और कोलकाता अब इस परियोजना के कारण हुगली नदी के नीचे एक-दूसरे से जुड़ गए हैं। हावड़ा मैदान से एक्सप्लेनेटेड तक ईस्ट वेस्ट मेट्रो का 4.8 किलोमीटर लंबा खंड 4960+ करोड़ की लागत से निर्मित है और इस खंड पर भारत का सबसे गहरा (30 मीटर गहरा) मेट्रो स्टेशन हावड़ा में होगा।

15 मार्च 2024 को भारत की पहली अंडरवाटर मेट्रो ट्रेन हावड़ा मैदान से कोलकाता मेट्रो के एसप्लेनेड स्टेशनों तक के लिए अपनी यात्रा की शुरुआत की। ईस्ट वेस्ट मेट्रो कॉरिडोर की नदी के नीचे सुरंग बनाने का कार्य अर्थ प्रेशर बैलेंसिंग टनल बोरिंग मशीन द्वारा सावधानी पूर्वक पिन पॉइंट सटीकता के साथ किया गया। नदी के नीचे इस सुरंग की लंबाई 520 मीटर है और यह नदी तल से 13 मीटर नीचे अवस्थित है। प्रत्येक कंक्रीट लाइनर खंड में आयातित नियोप्रिन मेन गास्केट और हाइड्रोफिलिक ऑग्ज़ीलियरी गास्केट लगे हैं। हाइड्रोफिलिक गास्केट पानी के संपर्क में आने पर फैलता है और सेगमेंटल जॉइंट के माध्यम से पानी के प्रवेश को रोकता है। ईस्ट वेस्ट मेट्रो के इस 4.8 किलोमीटर खंड पर हावड़ा मैदान, हावड़ा, महाकरण और एक्प्लानेड यह चार स्टेशन स्थित है। जहां वातानुकूलित स्टेशन, अत्याधुनिक यात्री सुविधा, लिफ्ट, एक्सीलरेटर, डिजिटल डिस्पले बोर्ड आदि लगाए गए हैं। जो अन्य स्टेशनों को बड़े ही गौरवशाली ढंग से सजाया गया है। समय के साथ इसके सुविधा और सेवाओं के यात्री कर रहे हैं। यह सेवा का प्रथम लाभ प्राप्त करने वाले कोलकाता वासी लोग खुश और अभीभूत हैं। देश की सबसे बड़ी और सुविधाजनक परिवहन यात्रा प्रदान करने वाली भारतीय रेल ने पहले भूमि उसके बाद अंडर ग्राउंड ट्रेन और अब एक नई शुरुआत अंडरवाटर ट्रेन में यात्रा की शुरुआत का सफल अध्याय आरंभ कर दिया है जो एक नए युग का आगाज है।

राजभाषा अधिनियम 1963

कतिपय विषयों और कार्य क्षेत्र में हिंदी तथा अंग्रेजी के प्रयोग के संबंध में 1963 में संसद द्वारा एक राजभाषा अधिनियम बनाया गया। इसमें कुल 9 धाराएँ हैं, जिनमें धारा 3(3) सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, जिसके अंतर्गत कुछ प्रमुख दस्तावेजों को द्विभाषी रूप से जारी करने की व्यवस्था की गई है। जो निम्नलिखित हैं-

1. सामान्य आदेश — General Orders
2. संकल्प — Resolution
3. परिपत्र — Circulars
4. नियम — Rules
5. प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन — Administrative or other reports
6. प्रेस विज्ञप्तियां — Press Release / Communiques
7. संविदाएं — Contracts
8. करार — Agreements
9. अनुज्ञप्तियां — Licences
10. निविदा प्रारुप — Tender Forms
11. अनुज्ञा पत्र — Permits
12. निविदा सचनाएं — Tender Notices
13. अधिसूचनाएं — Notifications
14. संसद के समक्ष रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज़ पत्र — Reports and documents to be laid before the Parliament

डिजिटल अरेस्ट-एक साइबर धोखा

राजेश कुमार
वरिष्ठ तकनीशियन, एम.टी.एस-56 शॉप

ऑनलाइन ठगी का एक और नया तरीका, जिसमें लोग को ऑनलाइन कैसे ठगा जाए, कैसे लूटा जाए, इसका नया तरीका ढूंढ़ निकाला है स्कैमर (ठग) ने जो है- डिजिटल अरेस्ट । इसमें स्कैमर अवैध वसूली के लिए जाँच अधिकारी, पुलिस वाला, ईडी, सी बी आई का रूप बनाकर मैसेज भेजते है या फिर वीडियो कॉल पर अरेस्ट (गिरफ्तार) करने के लिए डराते हैं। वर्तमान समय में यह ठगी बड़े पैमाने पर हो रहा है। इस धोखाधड़ी में स्कैमर कॉल या वीडियो कॉल कर बताता है कि आपको ड्रग के मामले में या फिर मनी लाऊंडरींग के मामले में डिजिटल अरेस्ट किया जाता है, या फिर कहेगें कि आपने जो पार्सल भेजा है, उसमें गैरकानूनी सामान मिला है, यदि आप कहेंगें कि आपने तो कुछ भेजा ही नहीं, फिर वो आपको गुमराह कर कहेंगें पार्सल पर आपका मोबाईल नम्बर एवं आपका ही आधार नम्बर लगा हुआ है, इसके बाद वो लम्बे समय तक कॉल पर या वीडियो कॉल पर रहने के लिए कहते हैं, क्योंकि आप डिजिटल अरेस्ट हैं। यदि आपको इससे छुटकारा चाहिए या फिर जमानत चाहिए तो जल्द से जल्द पैसे भेजो। इस तरह के मामले में लोगों ने करोड़ों रूपये गवा दिए हैं और टेंशन में आकर कई लोगों ने आत्महत्या तक कर लिया है।

डिजिटल अरेस्ट होता क्या है? दरअसल डिजिटल अरेस्ट एक साइबर फ्रॉड (धोखा) है, जिसमें स्कैमर पुलिस, इडी, इनकम टैक्स, कस्टम सी.बी. आई, ऑफिसर का रूप बनाकर कॉल कर कहता है कि आपके रिस्तेदार अवैध गतिविधियों में शामिल हैं, जैसे-आपका बेटा, आपका भाई, आपकी पत्नी आदि इस मामले में फंस चुके हैं, ड्रग्स पकड़े गये हैं, ये रहा सबूत। इस तरह के आरोप लगाकर स्कैमर इस मामले को खत्म करने के लिए वीडियो कॉल पर आने को कहता है। वीडियो कॉल पर नहीं आने पर अरेस्ट करने की धमकी दी जाती है। वीडियो कॉल पर स्कैमर पुलिस जैसे अधिकारी की वर्दी पहने होता है, या फिर अलग-अलग विभाग के अधिकारी की वर्दी में होता है, जिसकी वजह से बड़े पैमाने पर लोग धोखाधड़ी के शिकार हो रहे हैं, यह एक नये तरीके का साइबर फ्रॉड है। ज्यादातर मामले में ये देश के बाहर से संचालित किये जा रहे हैं, इंटरनेट के माध्यम से आपके पास कॉल आता है वो भी देश के बाहर से ही फोन आता है पर लगता लोकल नम्बर है या फिर भारत का ही नम्बर है। कई लोगों को ई मेल भी आते हैं, जो एकदम सरकारी दिखते हैं स्टाम्प लगे होते हैं। लगता है कि सीबीआई ने या फिर कोई सरकारी ऑथोरिटी ने उनको नोटिस भेजा है और जाँच चलेगी। ये भी फ्रॉड है। इसके अलावा ऐसे लोन ऐप चलाये जा रहे हैं, जहाँ आसानी से लोगों को लोन मिल जाता है, लेकिन बाद में उन्हें ब्लैकमेल किय जाता है। पूरा माहौल स्टूडियो जैसा होता है पीछे पुलिस का झंडा लगा रहता है, जैसे- राजस्थान पुलिस, गोवा पुलिस, म०प्र० पुलिस आदि लिखा होता है, अलग-अलग तरह के बैकग्राउंड लगाये रखते हैं, वर्दी पहने होते हैं, भारत का तिरंगा झंडा लगा रहता है और इस तरह वर्दी में आकर व्यक्ति से पैसा वसूली करना चाहता है। स्कैमर हमेशा थर्ड पार्टी बैंक एकांउट का इस्तेमाल करते हैं और अत्यंत गोपनीय मामला बताकर कहते है कि इस मामले की चर्चा किसी से भी न करें, और जब आप इस

मामले को किसी को बताएँगे ही नहीं फिर इस फ्रॉड के बारे में कैसे पता चलेगा। इसलिए हमेशा ये कहा जाता है कि जब भी ऐसा कॉल आए तो एक बार तो काटें, ना उठाएँ और साथ में ये भी कहें कि हम बात नहीं करेंगे और साइबर पुलिस को इसकी जानकारी दें।

आज के वक्त में सोचिए कि ये खतरा किस हद तक बढ़ सकता है, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) हमारी जिंदगी में आ चुका है, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से आप लोगों का चेहरा बदल सकते हैं, आवाज बदल सकते हैं, जरा सोचिए कोई AI की मदद से आपकी ही आवाज बनाकर आपके रिश्तेदार को फोन कर दे और पैसे माँग ले सोचिए इन खतरों का फिलहाल कोई अंत नहीं है, इसलिए सरकार को भी AI को लेकर कड़े कानून बनाने की आवश्यकता है और रेगुलेट करने की जरूरत है। इस साल के शुरुआत में सरकार ने आकड़े बताये थे कि अब तक 31 लाख साइबर क्राइम की शिकायतें लोगों ने दर्ज कराई है, लोकसभा में वित्त राज्य मंत्री ने बताया कि 2023-24 में लोगों के लगभग 177 करोड़ रुपये इस तरह के फ्रॉड में लूट लिए गए हैं। ये सारे डेबिट कॉर्ड, क्रेडिट कार्ड, इन्टरनल बैंकिंग फ्रॉड के जरिये किया गया है।

हाल ही में केरल के त्रिशूर शहर की एक घटना बहुत ही चर्चित रही। समाचारों में वजह एक स्कैमर मुंबई से पुलिस की वर्दी में वीडियो कॉल कर त्रिशूर शहर के साइबर सेल के एक इंस्पेक्टर को कॉल किया, पहले तो साइबर सेल अधिकारी ने अपना कैमरा ऑन नहीं किया, स्कैमर ने पूरे रौब से उस अधिकारी को आदेश दिया और कैमरे पर अपना चेहरा दिखाने को कहा एवं आरोप लगाकर डिजिटल अरेस्ट की बात कही। फिर असली साइबर सेल अधिकारी ने अपना चेहरा दिखाया एवं उसे ये सब छोड़ने को कहा, एवं उसे उसका मोबाइल नम्बर एवं लोके को जान लिया है, ऐसा कहा ये वीडियो भी सोशल मीडिया में आया है, इस तरह के अनेकों मामला देश के अलग-अल शहरों में घटित हो रहा है, इस तरह के कॉल से सावधान रहने की आवश्यकता है। इस तरह के मामले में रूकना है, सोचना है फिर निर्णय लेना है, कॉल आते ही रुकें, घबरायें नही, शांत रहें जल्दीबाजी में कोई कदम न उठायें, किसी को भी अपनी व्यक्तिगत जानकारी न दें, अपना पता या अपने बारे में कुछ न बताएं और फिर सोचें कि कोई भी सरकारी एजेंसी फोन पर इस तरह की धमकी नहीं देती है, कि हम आप पर कारवाई करेगें न ही वीडियो कॉल पर पूछताछ करती है, न ही ऐसे पैसों की मांग करती है, अगर डर लगे तो समझिए कुछ गड़बड़ जरूर है, और फिर निर्णय लें नजदीकी पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज करें या राष्ट्रीय साइबर हेल्प लाईन नम्बर 1930 पर कॉल करें या cyber crime gov.in पर रिपोर्ट करें, अपने परिवार एवं मित्रों को इसकी जानकारी दें, सबूत (साक्ष्य) को सुरक्षित रखें, शिकायत अवश्य ही करें, क्योंकि डिजिटल अरेस्ट जैसी कोई भी व्यवस्था भारतीय न्याय प्रक्रिया में नहीं है। हाल ही में 27 अक्टूबर 2024 को प्रधानमंत्री ने अपने ''मन की बात'' कार्यक्रम में भी उल्लेख किया है कि कोई भी सरकारी जाँच एजेंसी फोन कॉल पर अरेस्ट कभी नहीं करेगी। ये सिर्फ एक झूठ है, बदमाशों का गिरोह है जो दूसरे देशों से ठगी का काम करता है और इस वजह से उस तक हमारे सुरक्षा ऐजेंसी जल्द उस तक पहुँच भी नहीं पाती हैं। इसलिए हमें सावधान रहना चाहिए। सरकार भी इस ओर ध्यान दे रही है। साइबर फ्रॉड को रोकने के लिए राष्ट्रीय साइबर समन्वय केंद्र की स्थापना की गई है।

■

नानी की जिद

राम नरेश रजक
कार्यालय अधीक्षक, उप मुख्य अभियंता का कार्यालय

बिहार में आई प्राकृतिक आपदा से हमसब भली-भांति परिचित हैं। भीषण बाढ़ के रूप में आई उस आपदा ने, कई जिंदगियों को अपना ग्रास बना लिया । एक ऐसी त्रासदी जिसने सबकुछ मिटाकर रख दिया। पर जो न मिट सकी, वह थी आपस में प्रेम और मदद की लकीर । हर तरफ़ से लोग यथा-संभव लोगों की मदद कर रहे थे। प्रार्थना और दुआओं के हाथ हर जगह उठ रहे थे। रेस्क्यू टीस के जांबाज जवानों ने अपनी जान खतरे में रखकर, कितनों की जिंदगियाँ बचाई। एक तरफ़ पानी का सैलाब होता, बेबस लोग होते तो वहीं रेस्क्यू टीम के उम्मीद जागते कदम। जो लोगों की पूरी मदद कर रहे थे।

वहीं बिहार के लखीसराय जिला अंतर्गत एक गाँव खुटहा डीह है जो गंगा नदी के किनारे बसा हुआ है। गाँव में बसे लोग भी भीषण वर्षा से परेशान थे। पानी का बहाव भी, तेज वर्षा के कारण प्रचंड होता जा रहा था। लोग आपस में चर्चा कर रहे थे । कभी-कभी बारिश न होने के कारण सूखा पड़ जाता है और कभी बारिश सबकुछ बहाकर ले जाता है। उनकी बातों में मायूसी भी थी। अपना गांव, अपने लोगों से बिछड़ने का गम भी। वहीं सीढियों पर बैठी उस गांव की मुखिया, जो सबकी नानी थीं और बच्चों की परी अम्मा । झुर्रीदार चेहरा, जिसपर अब गड्ढों का बसेरा हो चला था। तोतली मुस्कान पर आँखों में कांतिमय चमक। जो उनके चश्मे के पीछे से झाँका करती थी। नानी सबकी बातों को बड़े ही गौर से सुने जा रही थीं। गम तो उन्हें भी बहुत था, इस गांव के बिखरने पर वह मजबूत बनी सबको हिम्मत बंधा रही थीं। सभी लोगों के जाने के बाद, वे वहीं चुपचाप बैठी रहीं।

इतने में रेस्क्यू टीम के लोग वहां पहुँच गये। गांव में पहले ही ऐलान करवा दिया गया था बाढ़ के पानी के बढ़ने के कारण गांव के तरफ़ बने बांध को खोलना पड़ेगा। ऐसे में गांव में रहना ख़तरे से खाली नहीं है। अपने चश्मों को उतारकर फूंक मारकर नानी ने उसपर पड़ी धूल को हटाया और अपने आँचल से पोंछते हुए अपने नाती से बोलीं, ''हर्षित, मुझे पता है कि अब हमें यह गांव खाली करना पड़ेगा। सभी लोगों ने अपना सामान बांध लिया है।'' उनकी आवाज़ में मधुरता भी थी, तो दर्द भी चुपके-से झाँक रहा था। हर्षित ने कहा, ''जी नानी जी, पानी बढ़ रहा है। जिससे गाँव के तरफ बने बांध को खोलना पड़ेगा। पानी का बहाव बहुत तेज है।

और यहाँ रुकना खतरनाक होगा।'' हर्षित का सभी लोगों के साथ एक भावनात्मक रिश्ता जुड़ गया था। नानी की आँखें पूरे गांव को अपलक निहार रही थीं। कैसे तिनका-तिनका जोड़कर इस गांव को बसाया गया था। गलियों में खेलते बच्चे, जिनसे अक्सर नानी खूब बातें किया करती थीं। बच्चे भी उन्हें नानी कहकर बुलाते थे। क्योंकि उनके पास हर चीज का जवाब होता था। पर नानी के पास उस सवाल का जवाब नहीं था, जो कल सोहन ने किया था, ''क्या हम फिर से इस गांव में मिल पाएंगे?'' नानी ने इस बात को टालते हुए कहा, ''हम जहां जाएंगे साथ ही जाएंगे।''

रेस्क्यू टीम लोगों को गांव से बाहर निकलने में मदद कर रहे थे। शाम होते-होते आसमान में बिखरे काले बदल और भी ज्यादा काले हो गये। मानो पूरे आसमान ने काले बादलों की चादर ओढ़ ली हो। हर तरफ अँधेरा, तेज हवाओं की सनसन करती आवाज फैल गई। मंदिर में टंगी घंटियाँ भी ज़ोर-ज़ोर से चीखने लगी। न आज शाम की आरती थी और न हीं शाम का दीया। सभी लोगों की आँखें नम थी। वे कभी अपने घर को निहारते तो कभी काले बादलों को । धीरे-धीरे पूरा गाँव खाली होने लगा । हर्षित ने नानीजी को आवाज लगाई, ''नानी चलो गाड़ी आ गई है।'' अपने घर पर लगे नाम ''नानी'' को अपने आँचल से पोंछकर वे भी गाड़ी में बैठ गई। गाड़ी अब चल पड़ी थी और पीछे सबकुछ छूटता जा रहा था। शायद यही सत्य है। आगे बढ़ने पर कुछ न कुछ तो छूट ही जाता है।

गाड़ी अपने गंतव्य पर पहुँच चुकी थी। सभी के रुकने का इंतजाम कर दिया गया था। सभी लोग आश्रय भवन में रुके थे। इतने में नानी को कहीं नहीं देखने पर हर्षित को उनकी चिंता सताने लगी। पूछने पर पता चला, वह वापस गाँव की ओर बढ़ गई हैं, कह रही थीं की कुछ छूट गया है। गाड़ी तेज करता हुआ हर्षित वहां पहुँच गया। पुलिस की गाड़ी खाली देखकर उसने नानी के बारे पूछा, तो उन्होंने बताया, हां एक बूढ़ी अम्मा आई थीं, जो गांव के तरफ़ बढ़ने की ज़िद कर रही थी। पर बांध को हमने खोल दिया है। हर्षित की बेचैनी अब बढ़ने लगी थी... पर.... वे कहाँ हैं? उसने पूछा। पुलिस ने इशारा करके बताया, वे वहाँ गाड़ी के अंदर बैठी हैं। हमने उन्हें नहीं जाने दिया। पानी का बहाव बहुत तेज है। हर्षित दौड़कर नानी के करीब पहुँच गया। नानी के आंसुओं का बांध भी अब टूट चुका था। जिसे बारिश के छींटों ने भी अपने साथ बहा लिया था।

■

देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली हिन्दी राष्ट्रभाषा पद की आधिकारिणी है।

- सुभाष चन्द्र बोस

विज्ञान और दर्शनः ज्ञान के दो पहलू

रोहन कुमार सिंह
प्रमुयांइं के तकनीकी सहायक और कनिष्ठ अभियंता
यांत्रिक विभाग

कुछ ही महीनों में हम सन् 1850 से 175 साल का महत्वपूर्ण मोड़ पार करने जा रहे हैं और यह जरूरी है कि हम पीछे मुड़कर देखे और यह जानने की कोशिश करे कि कैसे विज्ञान और दर्शन से जुड़ी घटनाओं ने आज की दुनिया को आकार दिया है।

यही वो साल था जब विलियम थॉमसन (केल्विन) ने ऊष्मागतिकी (Thermodynamics) का पहला नियम विकसित किया, जिसमें कहा गया है कि ब्रह्माण्ड की उर्जा एक सामान रहती है। उर्जा कभी भी क्षय नहीं होती, ये अपना रूप बदलती रहती है। यदि ऊर्जा न तो उत्पन्न होती है और न नष्ट होती है। तो यह एक प्रकार के लौकिक संतुलन में मौजूद है। इस नियम के खोज ने आधुनिक भौतिकी के विकास की नींव रखी। इसके बाद वैज्ञानिकों ने यह जाना कि ऊर्जा एक मापी जाने वाली चीज है और यह निश्चित तरीकों से काम करती है। इस खोज ने इंजीनियरों को अधिक कुशल इंजन और मशीनें डिजाइन करने में मदद की, जैसे स्टीम इंजन, रेफ्रिजरेटर और पावर प्लांट्स, क्योंकि अब उन्हें यह समझ में आया कि गर्मी को काम में कैसे बदला जा सकता है। तो वही, कांट, फिचे और हेगेल जो जर्मन आदर्शवाद के प्रमुख दार्शनिक थे और जिन्होंने ये माना कि इंसान की सोच और उसकी पहचान को समझना ही असली हकीकत को जानने का तरीका है। उनका ये भी कहना था कि जैसे-जैसे इंसान के विचार की स्वतंत्रता बढ़ती है, वैसे-वैसे उसका ज्ञान भी बढ़ता है। लेकिन वर्ष 1850 में मार्क्स ने जर्मन आदर्शवाद को नकारते हुए इसे भौतिकवाद में बदल दिया। यानी, उन्होंने कहा कि समाज और इतिहास का विकास सिर्फ विचारों या मानसिक प्रक्रियाओं से नहीं, बल्कि आर्थिक हालात और वर्ग संघर्ष से होता है। उन्होंने ये माना कि समाज की बदलती स्थिति और क्रांति आर्थिक और भौतिक कारणों से होती है। विज्ञान और दर्शन अक्सर दो अलग-अलग क्षेत्रों के रूप में देखे जाते हैं, लेकिन इनके बीच गहरा संबंध है। दोनों सत्य की खोज करते हैं और दुनिया को समझने की कोशिश करते हैं, बस दृष्टिकोण अलग है।

इसने हमें यह सिखाया कि भौतिक ब्रह्मांड में सब कुछ संतुलन की बंद प्रणाली में संचालित होता है। इसे ऐसे समझा जा सकता है कि पूरे विश्व की उर्जा एक

ढेंकुल (सी सौव) के खेल जैसी है, जिसके दोनों सिरे पे सकारात्मक और नकारात्मक ऊर्जा है, जब एक छोर नीचे की ओर जा रहा हो होता है तो दूसरे सिरे का ऊपर आना निश्चित है।

1850 के समय में ऊर्जा संरक्षण का सिद्धांत केवल एक भौतिकी का सवाल नहीं था, बल्कि यह दार्शनिक दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करता था। उस समय के दार्शनिकों और वैज्ञानिकों के लिए यह एक संकेत था कि प्रकृति एक ऐसी व्यवस्था है, जिसमें कोई भी संसाधन बिना कारण के नष्ट नहीं होता। यह विचार कि कुछ भी खोया नहीं जाता न केवल विज्ञान, बल्कि समाज के दृष्टिकोण को भी प्रभावित करता है। इस सिद्धांत ने मानवता को यह समझने में मदद की कि जैसे प्रकृति में ऊर्जा का कोई रूप समाप्त नहीं होता, वैसे ही मनुष्य के जीवन में भी किसी प्रकार का कार्य नष्ट नहीं होता, बल्कि हर क्रिया के परिणाम होते हैं। यह दर्शन न केवल व्यक्तिगत जीवन के निर्णयों में, बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण था।

लार्ड केल्विन के सिद्धांत से हमें यह समझना होगा कि हमारे जीवन में ऊर्जा एक सीमित संसाधन है, जिसे हमें सही दिशा में और उद्देश्यपूर्ण तरीके से उपयोग करना चाहिए। यह ऊर्जा न केवल शारीरिक रूप में होती है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक ऊर्जा भी हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं में प्रभाव डालती है। उदाहरण के तौर पर, यदि किसी कार्य में कोई समस्या उत्पन्न होती है, तो इसके बजाय कि हम उस पर घंटों बहस करें या दूसरों पर दोषारोपण करें, अगर हम सीधे समस्या का समाधान ढूंढने में लग जाएं, तो इससे हमारी ऊर्जा का सही उपयोग होगा। यही कारण है कि तर्क और क्रिया के बीच अंतर महत्वपूर्ण है: एक में ऊर्जा का अपव्यय होता है, जबकि दूसरे में ऊर्जा का रचनात्मक उपयोग। तर्क-वितर्क में अत्यधिक लिप्त होना हमारे जीवन में ऊर्जा के अपव्यय का कारण बन सकता है, खासकर जब हम उस ऊर्जा का उपयोग किसी उद्देश्यपूर्ण कार्य को करने में न करें।

आइए हम एक नजर डालते है उन प्रसिद्ध वैज्ञानिकों और दार्शनिकों पर जिन्होंने अनावश्यक तर्क-वितर्क से बचने के लिए अपनी ऊर्जा को बचाया।

आइजैक न्यूटनः न्यूटन ने अपने समय के बहसों से खुद को दूर रखा और अपने कार्यों में पूरी तरह से तल्लीन रहे। उनकी प्रसिद्ध कहावत यदि मैं दूसरों से आगे बढ़ सका, तो यह केवल इस कारण से था कि मैंने खुद को ऊंचे कंधों पर खड़ा किया (If I have seen further, it is by standing on the shoulders of giants)। इस बात का प्रतीक है कि उन्होंने ज्ञान के निर्माण के लिए तर्क की बजाय अपने काम में ध्यान केंद्रित किया।

अल्बर्ट आइंस्टीनः उनकी प्रसिद्ध उक्ति, शांति और युद्ध का निपटारा तर्क से नहीं, बल्कि समझदारी से होता है, इस बात की ओर इशारा करती है कि उन्हें एहसास था कि नकारात्मक बहस और तर्क से किसी समस्या का समाधान नहीं निकलता। आइंस्टीन हमेशा विचारों और कार्यों में संतुलन बनाए रखते थे, और जब आवश्यक होता था, तब ही तर्क और बहस करते थे।

लियोनार्डोदा विंचीः दा विंची के पास एक मजबूत वैज्ञानिक और कला के दृष्टिकोण था और वे हमेशा अपनी कृतियों में व्यस्त रहते थे, बजाय इसके कि दूसरों के साथ बहस करने में अपना समय बर्बाद

करते।

कंटः उनका मानना था कि ज्ञान और तर्क केवल उसी हद तक उपयोगी होते हैं जब वे एक उद्देश्यपूर्ण और रचनात्मक मार्ग में लगें।

ओशोः ओशो ने हमेशा कहा कि यदि किसी व्यक्ति को सचमुच जागरूक होना है, तो उसे निरर्थक बहसों से बचना चाहिए, क्योंकि तर्क-वितर्क से कभी भी कोई निष्कर्ष नहीं निकलता। वे विश्वास करते थे कि हर व्यक्ति का सत्य अपने भीतर होता है, और उसे बाहर के तर्कों या दूसरों की राय से प्रभावित होने की जरूरत नहीं है।

ऊर्जा संरक्षण का यह वैज्ञानिक आविष्कार एक गहरे दार्शनिक अर्थ को दर्शाता है। यह दृष्टिकोण हमें याद दिलाता है कि हमारे दुनिया के साथ संपर्क में आने वाले क्रियाएं स्थायी प्रभाव छोड़ती हैं। जैसे भौतिक ऊर्जा रूपांतरित होती है, वैसे ही हमारे द्वारा दूसरों पर डाला गया नैतिक प्रभाव भी बदलता है।

धार्मिक और दार्शनिक शिक्षाओं में, जैसे भगवद गीता और बाइबिल में, सगुण, विनम्रता और दयालुता को बढ़ावा देने के साथ-साथ अन्याय या हानिकारक कार्यों से बचने की सलाह दी गई है।

दर्शनशास्त्री फ्रेडरिक नीत्शे ने कहा, जो राक्षसों से लड़ता है, उसे सावधान रहना चाहिए कि कहीं वह स्वयं राक्षस न बन जाए। दूसरे शब्दों में, क्रोध या द्वेष के साथ किए गए कार्य अधिक नकारात्मकता पैदा कर सकते हैं और एक आत्मनिर्भर चक्र बन सकते हैं। अच्छी आदतों को बनाए रखने और हानिकारक प्रवृत्तियों से बचने का महत्व केवल एक नैतिक निर्देश नहीं है, बल्कि इसे वैज्ञानिक रूप से समझा जा सकता है, क्योंकि यह एक बड़े ऊर्जावान संतुलन का हिस्सा है।

■

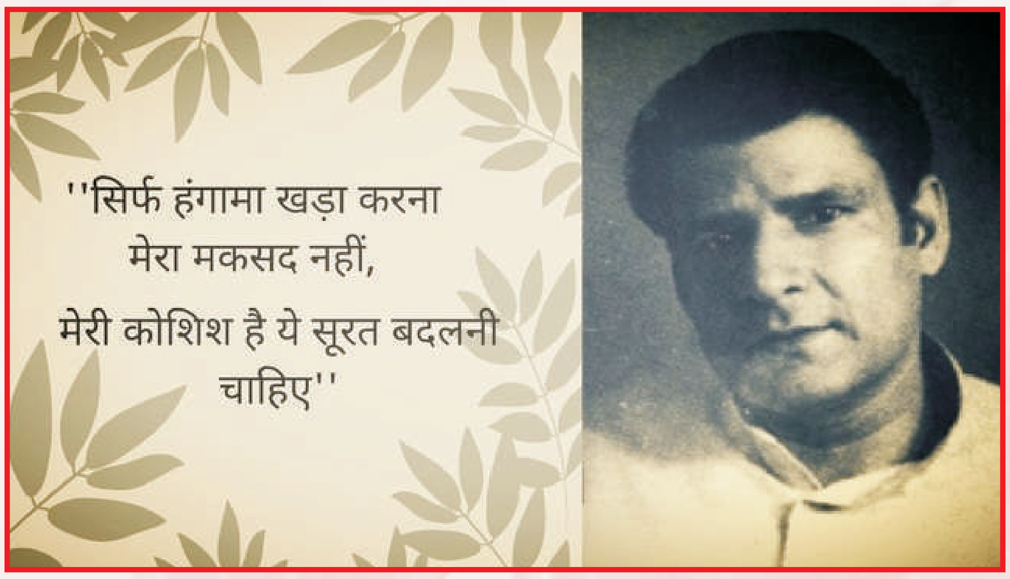

बस रेल सफर कर जाती है

कल्याण मुखर्जी
वरिष्ठ लिपिक, सुरक्षा कार्यालय

जब चलती है रेल पटरी पर बड़े हर्ष उमंग से जाती है,
कभी भीड़ लिए कभी माल लिए अस्तित्व अपना जताती है,
कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी दूरी समझ नहीं आती है,
कई नए कई पुराने उम्मीदों को लक्ष्य तक पहुँचाती है,
बस रेल सफर कर जाती है, बस रेल सफर कर जाती है।
चैन्नई से आता है डिब्बा, बैंगलुरू से है चक्का,
चित्तरंजन से इंजन लगकर, सफर होता है पक्का,
सफेद कमीज़ में गार्ड बाबू, टीटी कोट पहनकर आता है,
बस रेल सफर कर जाती है, बस रेल सफर कर जाती है।
राजस्थान की कड़ी धूप में उम्मीद, मृगतृष्णा बन कर आती है,
कश्मीर की प्रचंड जाड़ इसमें साहस भर जाती है।
कन्याकुमारी का पंबन पुल इसे धैर्यवान बनाती है,
पाताल रेल का मनोरंजक सफर इसमें उत्साह भर जाती है,
इसके मुकाबले और कोई भी नजर हमें नहीं आती है,
बस रेल सफर कर जाती है, बस रेल सफर कर जाती है।
बड़ी मेहनत, कष्ट, परिश्रम से कर्मी पटरी अनुरक्षण करता है,
लाल हरे रंगों में सिग्नल, चालक खूब पकड़ता है,
झंडा फहरता सीं-सीं सीटी खूब जोरों से आती है,
बस रेल सफर कर जाती है, बस रेल सफर कर जाती है,
रेल चलती, रोजी-रोटी लाखों के सपने दिखाती है,
भाप इंजन से विद्युत तक दूरी कम अब लगती है,
हँसी-मजाक और दुख भी कुछ हद तक यहाँ पर बँटती है,
एल एच बी कोच में बैठ सफर बहुत सुहाना कटता है,
सुहाना है सफर और मौसम भी सुहाना मानो मधुर गीत कोई गाती है,
बस रेल सफर कर जाती है, बस रेल सफर कर जाती है।
करोड़ों जज्बात लाखों सपने रेल में विश्वास रखते हैं,
लोकल ट्रेन में लटकतें लोग बात अब नहीं जचती है,
लोग हो कम कोच हो ज्यादा बात साकार हो सकती है,

सपने हैं बड़े, लक्ष्य है दूर पर पूरी होगी यह ऐसा लगता है,
यह प्रचंड जज्बात उत्साह विश्वास, रेल परिवार में आता है,
बस रेल सफर कर जाती है, बस रेल सफर कर जाती है।
जब समय कठिन परीक्षा का संकट सिर पर आता है,
दुर्घटना पर दुर्घटना बड़ा प्रश्न चिन्ह लगाता है,
तब मालिक भी दिल्ली छोड़, घटना स्थल पर आता है,
बारह लाख कर्मियों का विश्वास यूँ ही व्यर्थ नहीं जाता है,
संकट का साया पार किए गाड़ी फिर से चलने लगती है,
बस रेल सफर कर जाती है, बस रेल सफर कर जाती है।
यह जीवन भी है रेल की भाँति दुख-सुख आते जाते हैं,
पर पटरी पर से नहीं है हटना यह रेल हमें सीखाती है,
बड़े हर्ष, उल्लास, उमंग से रेल गीत यह गाती है,
बस रेल सफर कर जाती है, बस रेल सफर कर जाती है।

राष्ट्रीयता

देवेन्द्र शर्मा
वरिष्ठ अभियंता

गर हो सके तो प्रेम की गंगा बहाइये,
मानव होकर मानवता का धर्म निभाइये।
बस कीजिए हमें, धर्म और जाति में बँटना,
भाषण और क्षेत्रीयता के जहर से बचाइये ।
क्यों मारती हो माँ मुझे अपने ही कोख में,
गर होगी न बेटी, बहु कहाँ से लाओगे।
क्यों जल रही है बेटियाँ दहेज की आग में
समाज की इस कुरीति को जड़ से उखाड़िये।
नफरत फैला रहे हैं, आरक्षण के नाम पर
गरीबी हो जहाँ भी इसको मिटाइये।
जुल्मों - सितम की आग लगी है यहाँ-वहाँ
नफरत से नहीं भाईचारा से इसको बुझाइये।
जन-जन में राष्ट्रीयता की अलख जगाइये
जयचंद और मीरज़ाफर से भारत को बचाइये।

नारी व्यथा

देवेन्द्र कुमार
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक
देशबन्धु विद्यालय

आरजी कर अस्पताल का प्रशिक्षण लेकर,
हम बहुत इतराए थे।
हमें यहाँ प्रकाश मिलेगा,
हम प्रकाशित हो जाएगें।
डॉ. की शिक्षा लेकर,
जन कल्याण कर जाएगें।
माता-पिता का अरमान पूरा कर,
अपना परिवार बसाएगें।
अपना मान-सम्मान पाकर,
महिला को आगे बढ़ाएगें।
क्या पता था सारे दानव
मेरी इज्जत लूटेगें ?
हमने जो सपने देखे थे,
सारे सपने टूटेंगे।
मेरी अपनी मान-मर्यादा,
बॉट-बाँट कर खाएँगें।
जिसे मैं अपना रक्षक समझा,
वे भक्षक बन जाएँगे।
अपना हित साधने हेतु,
हम पर ही दाव लगाएँगे।
मेरे सारे सपने तोड़कर,
जिन्दा ही मुझे खा जाएँगे।
पाप का घड़ा फूट चुका है,
सारा जग अब जान चुका है।
मान-सम्मान का मुखौटा,
सारा मिट्टी में मिल जाएगा।
गलत कर्म से धन कमाया
वह भी सब लूट जाएगा।

बहनों को तो न्याय मिलेगा,
तुम्हे फाँसी हो जाएगी ।
हर मानव अब सोचेगा,
नारी में माँ-बहनों को देखेगा।
देवेन्द्र कहता है, नारी सरस्वती, लक्ष्मी, काली है,
इस पर अत्याचार नहीं करो, यह सृष्टि की रखवाली है।

मनोदशा

वसंत कुमार टुडू
हेल्पर, शॉप सं०-16

वेदना के प्रहार से जल रही थी मैं
उनकी दरिंदगी के आगे पिघल रही थी मैं
तिल-तिल कर साँसे थम रही थी मेरी।
नाजुक काया पत्थर समान जम रही थी मेरी
मैंने भी बख्शने की गुहार लगाई थी
पर हैवानों को मेरी कोमलता नजर न आई थी,
सर्वनाश की सूली पर मुझे चढ़ाया था
तब जाकर दरिंदों को चैन आया था।
गलती नहीं थी मेरी फिर भी मुझपर क्यूँ यह सितम ढाया गया
हवस की चिता में लिटाकर मुझे क्यों झुलसाया गया,
हर पल पवित्रता खोने की आहुति दे रही थी मैं
आँसुओं की सैलाब में भीगकर प्राण खो रही थी मैं।
मानो इस धरा पर पाप का जाल बिछ-सा गया है
पापियों के अस्तित्व में पुण्यात्मा मिट-सी गई है
अज्ञान-सा छा रहा संसार में अंधकार है
विलाप कर रही हूँ मैं, मुझे न्याय की गुहार है।
मानवता का परिचय यहाँ कौन देता है
क्रूर व्यक्ति यहाँ फूलों को रौंद देता है,
इन धूर्त को अब धूल चटाएंगें
नारी सम्मान का पाठ पढ़ाएंगें।
हे स्त्री कोमल काया की प्रतिरूप हो तुम
नभ की निर्मल छाया और चंचल धूप हो तुम
अपनी जननी की खुशियों की क्यारी हो
तरू पर खिलती एक फुलवारी हो।
देवी स्वरूपा तुम बहन,
तुम माता, तुम विधाता हो
तुम जननी हमारी हो
हमारी भाग्य विधाता हो।

मोबाइल फोटोग्राफी के टिप्स और ट्रिक्स

पुल्ला महेश
मुख्य फोटोग्राफर, जनसंपर्क विभाग

मोबाइल फोटोग्राफी ने हमारे पलों को कैप्चर करने के तरीके को पूरी तरह बदल दिया है, जिससे हर किसी के लिए उच्च-गुणवत्ता वाली तस्वीरें लेना आसान हो गया है। आधुनिक स्मार्टफोन में शानदार कैमरे होते हैं, लेकिन कुछ टिप्स और ट्रिक्स सीखकर आप अपनी फोटोग्राफी को अगले स्तर पर ले जा सकते हैं।

1. अपने लेंस को साफ करें -

यह सुनने में सरल लग सकता है, लेकिन उंगलियों के निशान और धूल फोटो की गुणवत्ता को खराब कर सकते हैं। एक नरम कपड़े से लेंस को जल्दी से साफ करना सुनिश्चित करें ताकि आपकी तस्वीरें तेज और स्पष्ट रहें।

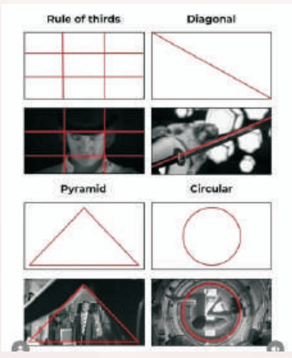

2. कंपोज़िशन के लिए ग्रिडलाइन्स का उपयोग करें

अपने कैमरे की सेटिंग्स में ग्रिडलाइन्स चालू करें ताकि आप रूल ऑफ थर्ड्स (तिहाई का नियम) का उपयोग कर सकें। यह एक क्लासिक कंपोज़िशन तकनीक है जो आपके शॉट्स को संतुलित बनाती है और मुख्य तत्वों पर ध्यान केंद्रित करती है।

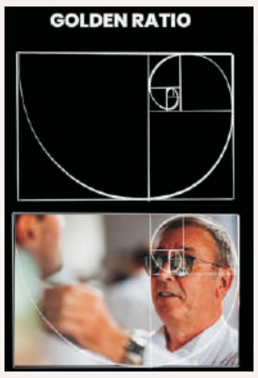

3. लाइटिंग पर ध्यान दें

अच्छी लाइटिंग बहुत महत्वपूर्ण है। गोल्डन आॅवर (सुबह जल्दी या शाम देर से) के दौरान शूट करें, जब हल्की, गर्म रोशनी होती है। दोपहर की तेज रोशनी से बचें क्योंकि यह अनचाहे शैडो बना सकती है। कम रोशनी में, नाइट मोड का उपयोग करें या कैमरा स्थिर रखने के लिए किसी सतह का सहारा लें।

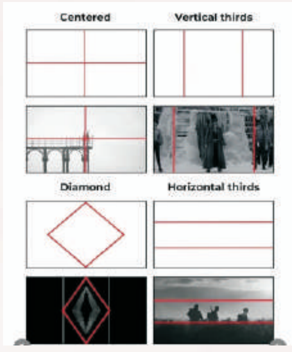

4. मैन्युअल रूप से एक्सपोज़र एडजस्ट करें

अधिकांश स्मार्टफोन स्क्रीन पर टैप करके और स्लाइड करके एक्सपोज़र को एडजस्ट करने की अनुमति देते हैं। सही एक्सपोज़र यह सुनिश्चित करता है कि आपकी हाइलाइट्स ओवरएक्सपोज़ न हों और शैडो में डिटेल बनी रहे।

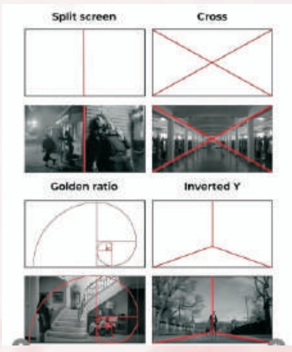

5. कोण और दृष्टिकोण के साथ प्रयोग करें

आम दृष्टिकोण से अलग हटें। नीचे झुककर, ऊपर से या किसी अनोखे एंगल से शूट करें ताकि आपकी तस्वीरें रोचक और रचनात्मक बनें।

6. ज़ूम करने से बचें

डिजिटल ज़ूम से तस्वीर की गुणवत्ता कम हो जाती है। इसके बजाय, अपने विषय के करीब जाएं या एडिटिंग के दौरान तस्वीर को क्रॉप करें।

7. पोर्ट्रेट मोड का समझदारी से उपयोग करें

पोर्ट्रेट मोड धुंधली पृष्ठभूमि (बोके इफेक्ट) बनाने के लिए शानदार है, लेकिन यह अच्छी रोशनी वाले विषयों पर सबसे अच्छा काम करता है। जटिल पृष्ठभूमि से बचें ताकि इफेक्ट प्राकृतिक दिखे।

8. एडिटिंग ऐप्स का लाभ उठाएं

Snapseed, Lightroom Mobile, या VSCO जैसे एडिटिंग टूल्स के साथ अपनी तस्वीरों को सुधारें। ब्राइटनेस, कॉन्ट्रास्ट और कलर बैलेंस को एडजस्ट करें ताकि आपकी तस्वीरें और बेहतर दिखें।

9. कैमरा स्थिर रखें

कंपकंपाते हाथ तस्वीर को खराब कर सकते हैं। दोनों हाथों का उपयोग करें, किसी स्थिर सतह का सहारा लें, या छोटे ट्राइपॉड का इस्तेमाल करें।

10. कैंडिड मोमेंट्स कैप्चर करें

सबसे प्रभावशाली तस्वीरें अक्सर अनजाने में ली जाती हैं। सतर्क रहें और वास्तविक, क्षणभंगुर पलों को कैप्चर करने के लिए तैयार रहें।

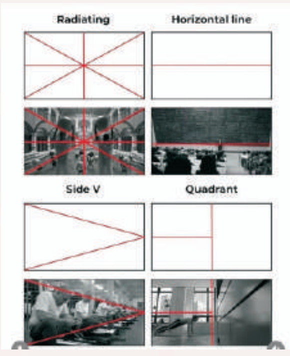

इन सरल तकनीकों के साथ, आप अपने स्मार्टफोन कैमरे की पूरी क्षमता का उपयोग कर सकते हैं और कहीं भी शानदार तस्वीरें ले सकते हैं।

रावण

रमाकान्त मंडल

वरिष्ठ अनु. इंजीनियर

आज रावण ने हड़ताल कर दी,
यह घोषणा सरे आम कर दो।
इस दशहरे पर मैं न जलूँगा,
अत्याचारियों के हाथों यूँ न मरूंगा ।
मैंने सीता को चुराया, यह सच है,
लेकिन, कभी हाथ न लगाया, यह भी सच है।
अरे! यह गुनाह तो लोग सरेआम करते हैं,
मुझको तो बस यूँ ही बदनाम करते हैं।
मुझे वही जलाये, जो स्वयं राम हो,
अन्यथा, ये अन्याय मेरे साथ न हो ।
गली - गली में सीताएं हैं नोची जा रही,
कहीं-कहीं तो अपने राम द्वारा ही बेचीं जा रही।
इन पापियों के हाथों से ही मुझको जलवाते हो ?
इनके हाथों से क्यूँ न सीताओं को बचाते हो ?
सच कहता हूँ।
मेरा भी खून है; खौल जाता।
जब कोई सीता की अस्मत से खेल जाता।
जी चाहता है, इन सभी को जला डालूं ।

अपने पराए

सुनयना बोस
पूर्व मुख्य कार्यालय अधीक्षक, चिकित्सा विभाग

श्री एवं श्रीमती पाल ने अपनी गृहस्थी मुंबई में प्रारंभ की जहां श्री पाल केन्द्रीय सरकारी नौकरी में नियुक्त थे। समय बीता एवं इस परिवार के आँगन में तीन पुत्रों ने जन्म लिया। पति एवं पत्नी ने बच्चों की शिक्षा को गंभीरता से लिया। बच्चे पुस्तकों में डूबे रहते थे। यहाँ तक के खेल-कूद का समय भी नियंत्रित था। पहला एवं दूसरा पुत्र पढ़ाई में अच्छे थे। परंतु छोटा वाला खेल-कूद में रुचि रखता था। दिन बीतते गए और बड़े बेटे ने अपनी इंजीनियरिंग की शिक्षा समाप्त कर, विदेश में अच्छी नौकरी प्राप्त की। दूसरे पुत्र भी अपनी स्नातक एवं एम बी ए पास कर एक अच्छे पद पर नियुक्त हुआ।

छोटा बेटा भी व्यवसाय कर अपनी गुजर बसर कर ही रहा था। परंतु जैसे-जैसे पाल दंपति ने अपने पुत्रों की शादी करवाई, एक-एक कर तीनों माँ बाप से अलग होने लगे। सर्वप्रथम पहला पुत्र जो विदेश से वापस आ एक मल्टी नेशनल कंपनी में नियुक्त हुआ था, उसने एक फ्लैट खरीदा और अपनी पत्नी के साथ अलग हो गया। इसी बीच में सेवा निवृत्ति के पश्चात श्री पाल ने अपना मकान बनवाया, इस आशा में कि तीनों बेटे अपने परिवार के साथ उनके साथ रहेंगे, परंतु ऐसा नहीं हुआ। एक-एक कर सभी बेटों ने अपने मकान खरीदे और अलग रहने लगे। श्रीमती उमा पाल ने अपने पति श्री नरेश को समझाया यही सही है, इससे हमारे संपर्क अच्छे बने रहेंगे। बच्चे बीच में उनसे मिलने आते और उनके माँ-बाप बड़े स्नेह से उनकी आवभगत करते थे।

समय का पहिया चलता गया और उनके पोते भी बड़े हो गए थे। पोते अपने दादा-दादी को बहुत प्रेम करते थे परंतु अपने माता-पिता के व्यवहार से चकित थे। ऐसा प्रतीत होता था, जैसे किसी मतलब के लिए उनके माता-पिता उनके दादा-दादी के पास आते थे। पाल दंपति ने कभी भी अपने बच्चों से कोई सहायता नहीं ली, न आर्थिक न व्यवहारिक। दोनों ने एक दूसरे को सहारा देकर अपने वृद्धावस्था को सँजोया।

समय बीता और एक दिन नरेश पाल को दिल का दौरा पड़। अकस्मात् इस घटना से श्रीमती उमा पाल डर गयीं। उन्होंने अपने पुत्रों से मदद मांगी। सब ने बहाना बनाकर टाल दिया। परेशान होकर उन्होंने पड़ोसियों की मदद ली और उनको अस्पताल में भर्ती किया। श्री पाल जीवन मृत्यु से एक महीना जूझे और अंतत उनके प्राण पखेरू उड़ गए। अब जो होने वाला था उससे श्रीमती पाल अनभिज्ञ थीं। उन्हें लगा था उनके बच्चे उनके बुढ़ापे की लाठी साबित होंगे परंतु ऐसा कुछ नहीं हुआ। उनके भाई-बहनों ने कुछ महीनों उनका साथ दिया, परंतु सब अपने-अपने परिवार के पास वापस चले गए।

श्रीमती पाल को समझ नहीं आ रहा था कि वे क्या करें। इसके बाद एक बहुत ही दुखद घटना घटी। तीनों बेटों ने आकर अपनी माँ को कहा कि चूँकि कोई भी इस घर में कभी रहने नहीं आएगा, तो उसे उन्हें बेचकर जो पैसा आएगा उसे तीनों में बराबर बाँट देना चाहिए। उमा सकते में आ गयीं जिन बच्चों को इतने नाज़ों से पाला था वे यह क्या बोल रहे थे।

श्रीमती पाल सिलाई कढ़ाई का काम बहुत अच्छे से करती थीं। यद्यपि उनके पति अच्छे पद में कार्यरत थे, उन्हें अच्छी पेंशन मिलती थी। पैसे की कोई तंगी नहीं थी। उन्होंने अपने बेटों को कहा में सोच कर बताती हूँ। उन्होंने आस-पास की गरीब लड़कियों को नि:शुल्क सिलाई बुनाई के लिए प्रेरित किया।

धीरे-धीरे उनके घर में लड़कियों की लाइन लग गई। बच्चियों को आत्मनिर्भर करने के लिए उन्होंने अपने घर में ही उनके काम की प्रदर्शनी लगाई। आस-पास के लोगों ने आकार उनकी बनाई हुई वस्तुओं को खरीदना शुरू किया। श्रीमती पाल का यह स्कूल अब उनके चाहने वालों से भर गया है। उनके घर पर आने वाली लड़कियाँ उनका खूब ख्याल रखती हैं।

श्रीमती पाल ने अपने बच्चों को कह दिया है, कि उनको अब बच्चों के मदद की आवश्यकता नहीं है। उनके जो

यह साथी हैं, उनका बहुत ख्याल रखते हैं। यहाँ तक कि बारी-बारी से आकर यह लड़कियां उनके घर में रह जाती हैं, जिससे कि उन्हें अकेलापन महसूस न हो, उनके छोटे-मोटे काम भी वह कर देती हैं। मनुष्य को अपना निर्वाह करने के लिए अपनों से अधिक पराए उनका साथ देते हैं।

■

भीगी सांझ

राजेश राज
पूर्व पेटंर, शॉप नं 65

झर-झर झरे अंगन में फुहार
उमंगों की रंग भरी बरसात
अबके वर्ष सावन में उन्माद
स्मृति-दीप जले भीगी सांझ।

रिमझिम रस- बूंदों की रागनी
सुरभित हर सांस की बांसुरी
घर महकाये सुमन परिजात
पवन पुरवैया की मन्द आंच।

रूप-चाँदनी की दिव्य क्षणिका
चिहुंक पड़ें पिंजर की सारिका
रुन-झुन पग-नूपुर की झंकार
राग-मेघ-मल्हार तरणि-ठांव।

मदन-मथित मादक यौवन-गंध
जीवन के हुए सिन्दूरी स्वप्न
नई आशाएं गदगद प्राण
झुकी पलकें तले घनी छांव।

सरि-तट लहरे आकाश गंगा
पंक्ति बद्ध उड़े सरोवर हंसा
गीत-झरना की कल-कल नाद
अंशुमाली जैसे बिन्दी-कांच।

लचके झूले अम्बुआ डाली
वन-उपवन की शोभा न्यारी
रक्तिम अंधरा पे चम्बुक मुस्कान
पल-प्रतिपल टूटे संयम-बांध।

क्षिति-पट पे इन्द्र -धनु-रेखा
जल-महोत्सव का लगा मेला
भूले-बिसरे जान-पहचान
मनहर लागे बाबूल-गांव।

दिनांक 05 सितम्बर 2024 को राजभाषा पखवाड़ा के अवसर पर अधिकारियों के लिए स्वरचित कविता पाठ का आयोजन किया गया।

दिनांक 06 सितम्बर 2024 को राजभाषा पखवाड़ा के अवसर पर ''हिंदी श्रुत लेखन प्रतियोगिता'' के आयोजन का एक दृश्य।

दिनांक 11 सितम्बर 2024 को आयोजित चिरेका राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 157 वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए पूर्व महाप्रबन्धक श्री हितेन्द्र मल्होत्रा।

दिनांक 23 सितम्बर 2024 को आयोजित राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह के अवसर पर पूर्व महाप्रबन्धक श्री हितेन्द्र मल्होत्रा, मुराधि एवं प्रमुयांइं श्री हामिद अख्तर एवं राधि डॉ मधुसूदन दत्त नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत करने वाले दल के सदस्यों के साथ।

कर्नैल सिंह डैम, कारखाना कार्यालय के निकट

Photo by : Pulla Mahesh, Chief Photographer

Printed by :
SHINING PRINTERS
Usha Apartment, Ramdhani More, Hutton Road
Asansol- 713301
Mob.: 9434440486, 8637074503
E-mail.: palu.banerjeeshin@gmail.com